मुसलमानो! हक़ पहचानो!
ईमान
नमाज़ कायम करो
कुरआन पढ़ो
रोज़ा रखो
ज़कात अदा करो
हज करो
दीनी किताबों का अदब कीजिए। घरेलू समान को दीनी किताबों के ऊपर मत रखिये।
इस किताब को पहले आप खुद पढ़ें फिर दूसरों को पढ़ने के लिए दें।
RAZAVI BOOK DEPOT
11/15, Haji Yaseen Market Mansoor Park, Allahabad, U.P.
घर बैठे किताब मंगवाए और 55% तक की छूट हासिल करें।
8687549224, 8934888526

786/92

सुन्नियों का वहाबियों, देवबंदियों के साथ झगड़ा क्यों है ? इस क्यों का जवाब देती है, ये लाजवाब किताब

मुसलमानो! हक़ पहचानो!

अल मुरत्तिब जनाब अली अहमद

ब–फैज़ान सरकार मेरे शेख व मुर्शिद, गुले गुलज़ारे रज़वियत, पीरे तरीकत, रहबरे शरियत, फख्र ए अज़हर, जांनशीन मुफ़्ती ए आज़म हिन्द, हुज़ूर ताज़उश्शरीया, हज़रत अल्लामा मौलाना **मुफ्ती मोहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ान** किब्ला दामत बरकातहुम आलिया।

नोट– *अगर इस किताब में आप अपना नाम या ईसाले सवाब के लिए अपने मरहूमीन का नाम लिखवाना चाहतें है तो लिखवा सकते है।*

नाम किताब — मुसलमानो! हक़ पहचानो!
नाम मुरत्तिब — अली अहमद
नज़रेसानी — मौलाना मोहम्मद अलीमुद्दीन नूरी निज़ामी
नाशिर — रज़वी बुक डिपो, मिर्ज़ा ग़ालिब रोड
मन्सूर पार्क, इलाहाबाद, (यू0पी0)
क़ीमत — 40 रू

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

तकरीज़

अज़ : मुबल्लिगे इस्लाम हज़रत मुफ़्ती मोहम्मद मुजाहिद हुसैन रज़वी
मुदर्रिस दारूल उलूम ग़रीब नवाज़, इलाहाबाद, (यू0पी0)
नाएब शहर काज़ी, इलाहाबाद, (यू0पी0)

****

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम, नहमदुहू व नुसल्ली अ़ला रसूलेहिल–करीम

दौरे हाज़िर में आमलोग, अपनी चन्द रोज़ा फ़ानी ज़िन्दगी को सजाने सँवारने में अपनी तमामतर तवानियाँ सर्फ़ कर रहे हैं लेकिन आख़ेरत की बाक़ी और हमेशा हमेशा रहने वाली ज़िन्दगी को नेक अन्जाम बनाने की इन्हें कोई फ़िक्र नहीं है। अल्लाह के मुक़द्दस रसूल जनाब मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहिवसल्लम एक हदीसे पाक में अपने असहाब को मोख़ातिब करके साफ़–साफ़ फ़रमा चुके कि **"अहले किताब बहत्तर फ़िर्क़ों में बट गये थे और ये उम्मत तिहत्तर फ़िर्क़ों में बट जाएगी। सब जहन्नम में जाऐंगें एक ही फ़िर्क़ा जन्नत में जाएगा'**। पैग़म्बर की पेशीनगोई के मुताबिक़ आज हमारे मोआशरे में कलमा पढ़ने वालों की मोतअद्दिद टोलियाँ मौजूद हैं लेकिन किसे फ़िक्र है कि वो पता लगाए कि इन में आख़िर वो फ़िर्क़ा कौन है जो जन्नत में जाएगा?

सारे ज़मानों में सबसे बेहतर ज़माना वो है जिसमें अल्लाह के महबूब जनाब मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहिवसल्लम नें अपनी ज़ाहिरी ज़िन्दगी के लम्हात गुज़ारे। इस ज़माने में भी कलमा पढ़ने वालों की, नमाज़ पढ़ने वालों की, रोज़ा रखने वालों की एक ऐसी टोली मौजूद थी जिन्हें कुरआन ने मुनाफ़िक़ और बेईमान कहा है, क्यूँ? इसलिए कि इन्होनें अपने दिलों में कुफ़्र छुपा रखा था। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त नें इन के दिलों में पोशीदा कुफ़्र को अपने नबी पर आशकारा कर दिया और ऐन जुमा के दिन भरे मजमा में एक–एक मुनाफ़िक़ का नाम ले–ले कर मस्जिदे नबवी से बाहर कर दिया।

आज हमारे दरमयान कलमा पढ़ने वालों की, नमाज़ पढ़ने वालों की, रोज़ा रखने वालों की अनेक ऐसी टोलियाँ है जिन्होने अपना कुफ़्र छुपाया नहीं है कि इन के कुफ़्र पर मुत्तला होने के लिए वही ए इलाही की ज़रूरत पड़े बल्कि अपनी किताबों में छाप दिया है जिस पर अहले हक़ मुत्तला है। मगर वह किताबों में छपे हुए अपने कुफ़्री अकाइद को आम लोगो से छुपा कर रात दिन अपना जत्था बढ़ाने की नापाक कोशिश में लगे हुए हैं इसलिए ज़रूरत है इस बात की कि इनके कुफ़्री अकाइद से आम लोगों को रूशनाश कराया जाए और बताया जाए कि **"है कवाकिब कुछ नज़र आतें है कुछ"**।

ज़ेरे नज़र किताब **"मुसलमानो! हक पहचानो!"** इसी सिलसिले की एक मुसबत कोशिश है। इस किताब से उन लोगों को बेपनाह रोशनी मिलेगी जो अहले सुन्नत व जमाअ़त व दीगर फ़िर्क़ों के माबैन इख़्तेलाफ़ात को मौलवियों का आपसी झगड़ा क़रार देकर अपना दामन झाड़ लेते है। दुआ है कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त इस किताब को लोगो की हिदायत का ज़रिया बनाए और इसके

मुरत्तिब जनाब अली अहमद साहब को अज़्रे जज़ील अता फ़रमाए।

मोहम्मद मुजाहिद हुसैन रज़वी,
मुदर्रिस मदरसा दारूल उलूम
ग़रीब नवाज़, इलाहाबाद (यू०पी०)
(21 जनवरी 2014)

तकरीज़

अज़ : हज़रत मौलाना मोहम्मद अलीमुद्दीन नूरी निज़ामी
B.A., M.A. in Arabic

****

पेशे नज़र किताब "मुसलमानो! हक़ पहचानो!" एक इस्लाही काविश है जो मौजूदा दौर के सबसे बातिल गिरोह नज्दी वहाबियों देवबंदियों के रद्द में लिखी गई है।

नज्दी गिरोह एक सदी से ज़ाइद अर्सा होने के बावजूद मुसलसल अपनी शातेराना और मुनाफ़िक़ाना चालों से अहले हक़ को गुमराह करने की नाकाम कोशिश करता रहा है।

इस पुरफ़ितन दौर और भागदौड़ भरी ज़िन्दगी में एक आम आदमी के लिए इन गुमराहों को पहचानना बहुत ही मुश्किल हो जाता है।

अली अहमद साहब ने अवामुन्नास की इस ज़रूरत को देखते हुए अपनी मसरूफ़ियत के बावजूद इस किताब को तरतीब दिया। मौसूफ़ ने बड़े उम्दा अन्दाज़ में इस्लाहे अक़ाइद के लिए हर उनवान को खंगाला और अक़ाइदे बातिला का रद्द इस तरह किया कि बातिल नज्दी गिरोह की ईंट से ईंट बज गई। यह किताब इस क़ाबिल है कि हर शख़्स इसे समझ सके और इससे फायदा हासिल कर सके।

अल्लाह तबारक व तआला से दुआ है कि अली अहमद साहब की कोशिशों को कुबूल फ़रमाए और उनके इल्मो अमल और ज़ौक़े तहरीर में बरकत इनायत फ़रमाये और इस किताब को मुफ़ीदे ख़ास व आम बनाये।

खाक पाये रसूल
मोहम्मद अलीमुद्दीन नूरी निज़ामी
सीतामढ़ी (बिहार)

मुसलमानो ! हक़ पहचानो !

दीने इस्लाम को दुनिया में तशरीफ़ लाए हुए सवा–चौदह सौ बरस से ज़्यादा हो गये।

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस लहलहाते चमन को उजाड़ने के लिए कई फ़ितने जैसे– (क़दरिया, जबरिया, राफ़ज़ी, ख़ारजी, मोअतजिलह, मर्जियह) पैदा हुए मगर सब इस्लाम के इस पहाड़ से टकराकर बर्बाद हो गये लेकिन आज से तक़रीबन 150 साल पहले पैदा हुआ वहाबियत का फ़ितना इन तमाम फ़ितनो से जबरदस्त है कि आज बाप सुन्नी है तो बेटा वहाबी। सास मिलाद और फ़ातेहा करवाना चाहती है तो बहू को सख़्त ऐतराज़ है। आख़िर ये वहाबी, देवबंदी, तबलीग़ी जमाअत वाले कौन है? ये कहाँ से आ गए? इनका अक़ीदा क्या है? इनकी हक़ीक़त क्या है? कुछ नहीं मालूम–

तो मुसलमान भाइयो! इन मुरतद फ़िर्क़ों की पूरी सच्चाई जानने के लिए आप इस किताब को पूरा पढ़िये।

वहाबियों के पैदा होने की पेशीनगोई (भविष्यवाणी)– सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने सहाबा से क़यामत तक पैदा होने वाले फ़ितनों को पहले ही बता दिया था।

जिसमें से एक फ़ितना वहाबियत का भी था और मुसलमानो को आगाह कर दिया था कि अरब के नज्द से फ़ितने पैदा होगें।

(सुबूत) हदीस– एक दिन दरिया ए रहमत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अल्लाह से दुआ फ़रमायी ऐ अल्लाह! हमारे शाम और यमन में बरकत नाज़िल फ़रमा तभी पीछे बैठे कुछ लोगों ने कहा या रसूलुल्लाह हमारे नज्द में बरकत के लिए दुआ कर दीजिए। फिर हुज़ूर ने शाम और यमन के लिए दुआ फ़रमाई पर नज्द का नाम नही लिया फिर लोगों ने याद दिलाया लेकिन आपने दुआ नही फ़रमाई और आख़िर में कहा कि मैं नज्द के लिए दुआ कैसे फरमाऊँ, वहाँ तो ज़लजले और फ़ितनें होगें और वहाँ शैतानी गिरोह पैदा होगें।

(हवाला– बुख़ारी शरीफ़, जिल्द 2, पेज नं. 1051)

हदीस– हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़िअल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मशरिक़ की तरफ़ (नज्द इसी तरफ है) रुख़ करके फ़रमाया कि फ़ितना यहाँ से उठेगा और शैतान की सींग निकलेगी। **(हवाला – मुस्लिम शरीफ, जिल्द 2, पेज नं. 393)**

हदीस– एक गिरोह निकलेगा जिनकी नमाज़ों और रोज़ों को देखकर तुम अपनी नमाज़ों और रोज़ों को हक़ीर (घटिया) समझोगे। वह कुरआन पढ़ेगें लेकिन कुरआन उनके हलक़ से नीचे नही उतरेगा। इन सारी ज़ाहिरी खूबियों के बावजूद वह दीन से ऐसे निकल जाएगें जैसे तीर शिकार से निकल जाता है। **(हवाला– मिश्कात शरीफ, पेज नं. 535)**

और हदीसो में फ़रमाया कि उनकी पहचान सर मुंडाना है और ये निकलते ही रहेंगें यहाँ तक की उनकी आख़िरी जमाअत दज्जाल के साथ होगी और ये बुत परस्तो को छोड़ेगें और मुसलमानो को क़त्ल करेगें।

(हवाला– बुख़ारी शरीफ़, जिल्द 1, किताबुल अंबिया)

नोट– बेशक आज भी ज़्यादातर वहाबी कसरत से सर मुंडाए हुए रहते हैं और इन्होंने मक्का और मदीना शरीफ़ पर हमला करके लाखो बेगुनाह मुसलमानो का क़त्ल किया।

ऊपर बताए गए फ़रमाने आली के मुताबिक अट्ठारहवीं शताब्दी की शुरूआत में यह फ़ितना वजूद में आ गया।

<u>वहाबियों का इतिहास</u>– वहाबी फितने का गुरू **'मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब'** था। जो 1703 ई. (1115 हि.) में **नज्द** में पैदा हुआ। अब **नज्द** का नाम बदलकर **रियाद** कर दिया गया है। ये रसूलुल्लाह, सहाबा ए कराम और औलिया अल्लाह की ताज़ीम से चिढ़ता था। इसने **"किताबुत्तौहीद"** नाम की किताब लिखी और उसमें मुसलमानो की दो क़िस्में बनाई **1**–मुवह्हिद, **2**–मुशरिक़, जो लोग इसकी मनगढ़ंत तौहीद को मान लेते उसे वह मुवह्हिद मुसलमान क़रार देता और बाक़ी बचे मुसलमानो को मुशरिक ठहराकर उनको क़त्ल करने और लूटने का फ़तवा देता था, इसलिए शुरू में लूटमार के शौक़ीन इसकी जमाअत में शामिल हुए। यह लोगों को सख़्ती से सर मुंडाने के लिए कहता था। इसने दरइयह के सरदार मुहम्मद बिन सऊद से अपनी लड़की की शादी कर के उसे अपना दामाद बना लिया फिर दामाद को साथ लेकर तलवार के ज़ोर पर अपने अक़ीदे को फैलाना शुरू कर दिया। ये पहले आसपास के छोटे इलाक़े लूटता और लूटे हुए माल से अपनी ताक़त बढ़ाता। 1773 ई. आते आते इन लोगों ने पूरे नज्द पर क़ब्ज़ा कर लिया फिर वहाबी 28 साल तक अपनी ताक़त को बढ़ाते रहें। अब वहाबियों का फ़ितना **"नज्द (रियाद)"** के बाहर फैलने के लिए तैयार था। वहाबियों ने 1801 ई. में ईराक पर, 1803 ई. में मक्का शरीफ़ और 1804 ई. में मदीना शरीफ़ पर हमला कर के कब्जा कर लिया और बेक़सूर लोगों, सय्यदों और उलेमाओं को क़त्ल किया और कई

मुक़द्दस जगहों की बेहुरमती की। वहाबियों की ये हरकत पूरी दुनिया के मुसलमानो को नागवार गुज़री। उस समय प्रथम विश्व युद्ध चल रहा था। जिसमें तुर्की की जंग ब्रिटेन और फ्रांस् के साथ चल रही थी इसलिए तुर्की के बादशाह ने मिस्र के वाली मुहम्मद अली पाशा से वहाबियों के ख़िलाफ़ जेहाद का शाही फ़रमान भेजा। मुहम्मद अली पाशा ने इब्राहीम पाशा को इस्लामी लश्कर का सरदार बनाकर अरब भेजा। जिसनें वहाबियों के लश्कर को 1818 ई. में हरा दिया। इस तरह मक्का और मदीना शरीफ़ पर दोबारा सुन्नी मुसलमानो का क़ब्ज़ा हो गया। इस्लामी लश्कर की इस कार्यवाही से यूरोप के ईसाई देश डर गए। ब्रिटेन, फ्रांस और दूसरे यूरोपीय देशों को यह बात बिल्कुल अच्छी नही लगी। इन देशों ने मिलकर तुर्की सल्तनत को बर्बाद कर डाला। अब मक्का और मदीना शरीफ़ की रखवाली करने वाला कोई भी नही था। मौदान खाली देखकर 1925 ई. में अब्दुल अज़ीज़ बिन सऊद ने ब्रिटेन की मदद से बन्दूक, गोला, बारूद से दोबारा हमला कर पूरे हिजाज़ पर कब्ज़ा कर लिया। दोबारा खूनी वहाबियों ने उलेमा और नेक लोगों के खून से अपने हाथ रंगे। जन्नतुल माला और जन्नतुल बक़ी के क़ब्रिस्तान में, जहाँ प्यारे रसूल के ख़ानदान वाले और सहाबा ए कराम आराम फरमा थे, उनकी कब्रो पर इन वहाबियों ने बुलडोज़र चलवाकर बराबर कर दिया और मक्का शरीफ़ की दूसरी मुक़द्दस ज़गहों जैसे– हज़रत आमिना रज़िअल्लाहो अन्हा का घर जिसमें आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पैदा हुए थे को शहीद कर दिया गया (नोट– अब यहाँ लाइब्रेरी बनवा दी गई है) और लगभग 350 मस्जिदें (जैसे– मस्जिद ए ज़िन्न, मस्जिद ए बुकुबैस, मस्जिद ए नूर...... वगैरह) को शहीद कर दिया गया। तब से लेकर अब तक वहाबियों का ज़बरदस्ती कब्ज़ा वहाँ पर है।

(हवाला– तारीखे नज्दो हिजाज़)

<u>खूनी वहाबियों के बारे में देवबंदियों का अक़ीदा</u>– देवबंदियों के पेशवा रशीद अहमद गंगोही लिखते हैं "मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब के मानने वालो को वहाबी कहते हैं। उनके अक़ाइद उम्दा थे अलबत्ता मिजाज़ में शिद्दत थी और उनके मुक़्तदी अच्छे हैं मगर हाँ जो हद से बढ़ गए।"

(हवाला– फतावा रशीदिया, जिल्द 1, पेज न. 280)

सुन्नी मुसलमान भाइयो! ये तो थे अरब के वाक़ेयात अब सुनिये हिन्दुस्तान में वहाबियत कैसे पहुंची?

<u>हिन्दुस्तान में वहाबियत</u>– दिल्ली में 1779 ई. (1193 हि.) में एक मौलवी पैदा हुआ जिसका नाम "इस्माईल देहलवी" था। ये जब हज के

लिए सऊदी अरब गया तो इसने "मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब नज्दी" की लिखी किताब **"किताबुत्तौहीद"** पढ़ी और वहाबियत कुबूल कर ली और वापस हिन्दुस्तान आकर किताब का तर्जमा करके उसका नाम **"तक़वियतुल ईमान"** रखा। इस तरह यह फ़ितना हिन्दुस्तान पहुँचा। **हिन्दुस्तान में "इस्माईल देहलवी" के मानने वाले दो गिरोह में बँटे–**

1. अहले हदीस या सलफ़ी (ग़ैरमुक़ल्लिद) **2.** देवबंदी या नकली सुन्नी

इन दोनों गिरोहों में अन्तर (फ़र्क़) निम्नलिखित है:–

अहले हदीस या सलफ़ी (ग़ैरमुक़ल्लिद)	देवबंदी या नकली सुन्नी
इन लोगों का तौर तरीक़ा हूबहू सऊदी अरब के वहाबियों की तरह है। इन लोगों ने भी तक़लीद मतलब चारो इमामों की पैरवी का इनकार किया और चारो इमामों को खूब गालियाँ दी। ये किसी भी इमाम के मुक़ल्लिद नहीं हैं इसलिए इन्हें गैर मुक़ल्लिद भी कहते हैं। ये इमामों की पैरवी करने वालों को काफ़िर और मुशरिक कहते हैं। वहाबियों के नजदीक तमाम औलिया अल्लाह (जैसे– ग़ौस पाक, ख़्वाजा ग़रीब नवाज़, निज़ामुद्दीन औलिया.....वगैरह) सब गुमराह थे क्योंकि सभी औलिया अल्लाह किसी एक इमाम की पैरवी जरूर करते थे। वहाबियों ने आम लोगों में फैलाया कि कुरआन और हदीस हर कोई समझ सकता है लिहाज़ा तक़लीद (इमामो की पैरवी) जरूरी नहीं कि वो बिद्अत है। जाहिल वहाबियों ने जब से तक़लीद का इन्कार किया है तब से इनका सुन्नियों के साथ सैकड़ो नही बल्कि हज़ारों मसाइल पर इख़्तेलाफ़ (झगड़ा) हो गया है। जब आम लोगों में वहाबी नाम बदनाम हो गया तो इन लोगों ने अपना नाम बदलकर **"अहले हदीस"** कर लिया। अब तो ये लोग अपने आप को **(सलफ़ी)** भी कहने लगे हैं। वहाबियों के नये फ़ितने की कुछ झलकियाँ आप भी देखिए, वहाबियों के यहाँ–	जब कुछ वहाबियों ने देखा कि पहले वाले की तरह एकदम पक्का वहाबी ज़ाहिर करेगें तो मुसलमान हमसे नफ़रत करेगें इस लिए इन्होंने तक़लीद को जाइज़ कहा और अपने आप को इमामे आज़म अबू हनीफ़ा को मानने का झूठा दिखावा किया। ये नमाज़ रोज़े में एकदम सुन्नी मुसलमानों की तरह सामने आए इसलिए इनको कहते है गुलाबी वहाबी या नक़ली सुन्नी या देवबंदी। इनको सिर्फ इनका अक़ीदा जानकर ही पहचाना जा सकता है। क़ासिम नानौतवी ने (1866 ई.) में उत्तर–प्रदेश के जिला सहारनपुर में देवबंद नाम की जगह पर मदरसा खोला। देवबंदियों का वही अक़ीदा है जो वहाबियों

1. काफ़िर का ज़िबह किया हुआ जानवर खाना जाइज़ है। 2. तरावीह की नमाज़ आठ रकात होती है। 3. मर्द चार से ज़्यादा शादी कर सकता है। 4. "क़यास" को बिद्अत कहा जाता है। 5. मनी (वीर्य) पाक है। 6. बदन से कितना ही खून निकले इससे वज़ू नही टूटता।

का है। बस कुछ मसलों पर इख़्तेलाफ़ है। लेकिन हिन्दुस्तान के वहाबी और देवबंदी दोनों इस्माईल देहलवी को अपना गुरू और पेशवा मानते हैं।

देवबंदियों और वहाबियों ने मिलकर अल्लाह और उसके रसूल जनाबे मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहिवसल्लम की ऐसी तौहीन की, कि कोई खुला हुआ काफ़िर भी नहीं करता। इनके अक़ीदे इनकी किताबों में हज़ारों की तादाद में मौजूद हैं और आज भी छप रहें हैं। यहाँ चन्द का मुलाहिज़ा आप भी फ़रमाएँ और बताएँ कि क्या ऐसा अक़ीदा रखने वाले मुसलमान कहलाने के लाएक़ हैं?

1. <u>वहाबी / देवबंदी अक़ीदा</u>– हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मिस्ल व नज़ीर मुमकिन है। **(हवाला– यकरोज़ी, पेज नं. 144, लेखक– मौलवी इस्माईल देहलवी)**

2. <u>वहाबी / देवबंदी अक़ीदा</u>– जिसका नाम मुहम्मद या अली है वह किसी चीज़ का मालिक व मुख़्तार नहीं। **(हवाला– तक़वियतुल ईमान, पेज नं. 51, लेखक– इस्माईल देहलवी)।**

3. <u>वहाबी / देवबंदी अक़ीदा</u>– हुज़ूर को दीवार के पीछे का भी इल्म नहीं। **(हवाला– बराहीने कातेआ, पेज नं. 121, लेखक– ख़लील अहमद अंबेठवी देवबंदी)।**

4. <u>वहाबी / देवबंदी अक़ीदा</u>– इस इल्मे ग़ैब से मुराद बाज़ ग़ैब है या कुल अगर बाज़ इल्मे ग़ैबिया है तो उसमें हुज़ूर ही का क्या कमाल, ऐसा इल्मे ग़ैब तो ज़ैद व उमर बल्कि हर बच्चों, पागलों और तमाम जानवरों को भी हासिल है। **(हवाला– हिफ़्ज़ुल ईमान, पेज नं. 15, लेखक– अशरफ अली थानवी देवबंदी)।**

5. <u>वहाबी / देवबंदी अक़ीदा</u>– आवाम के ख़याल में तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सबसे आख़िरी नबी हैं। मगर इल्म वालों के नज़दीक ये माना दुरूस्त नहीं फिर मक़ामे मदह (तारीफ़) में **"वलाकिन रसूलल्लाहे व ख़ातमन्नबीय्यीन"** क्योंकर सही हो सकता हैं। **(हवाला– तहजीरून्नास, पेज नं. 4, लेखक–क़ासिम नानौतवी बानी मदरसा देवबंद)**

6. <u>वहाबी / देवबंदी अक़ीदा</u>– अगर बिल फर्ज़ बाद ज़माना–ए–नबवी

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कोई नबी पैदा हो तो भी ख़ातमीयते मुहम्मदी में कुछ फर्क ना आएगा। **(हवाला– तहजीरून्नास, पेज नं. 21, लेखक– क़ासिम नानौतवी बानी मदरसा देवबंद)**

7. <u>वहाबी/देवबंदी अक़ीदा</u>– अंबिया (नबी और रसूल) अपनी उम्मत में मुम्ताज़ होते हैं तो उलूम ही में मुम्ताज़ होते हैं, बाक़ी रहा अमल इसमें बज़ाहिर उम्मती नबी के बराबर हो जाते हैं, बल्कि बढ़ भी जाते हैं। **(हवाला– तहजीरून्नास, पेज नं. 8,लेखक–कासिम नानौतवी बानी मदरसा देवबंद)**

8. <u>वहाबी/देवबंदी अक़ीदा</u>–नमाज़ में हुज़ूर सल्लल्लाहुअलैहि वसल्लम का ख़याल आने से अच्छा है कि अपने गधे और बैल के ख़याल में डूब जाया जाए। **(हवाला–सिराते मुस्तक़ीम, पेज नं. 167, लेखक–इस्माईल देहलवी)**

9. <u>वहाबी/देवबंदी अक़ीदा</u>– शैतान और मलिकुल मौत का इल्म हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इल्म से ज़्यादा है। **(हवाला– बराहीने क़ातेआ, पेज नं. 122, लेखक– ख़लील अहमद अंबेठवी देवबंदी)**

10. <u>वहाबी/देवबंदी अक़ीदा</u>– कौआ (Crow) खाना सवाब है। **(हवाला–फ़तावारशीदिया,पेज 597, लेखक–रशीद अहमद गंगोही देवबंदी)**

11. <u>वहाबी/देवबंदी अक़ीदा</u>– लफ़्ज़ **"रहमतुल्लिल आलमीन"** सिफ़त ख़ास रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नहीं है। **(हवाला– फ़तावा रशीदिया, पेज नं. 104, लेखक–रशीद अहमद गंगोही देवबंदी)**

12. <u>वहाबी/देवबंदी अक़ीदा</u>– ईद में गले मिलना बिद्अत है। **(हवाला– फ़तावा रशीदिया, पेज नं. 148, लेखक– रशीद अहमद गंगोही देवबंदी)**

13. <u>वहाबी/देवबंदी अक़ीदा</u>– नबी की तारीफ़ सिर्फ इन्सान की सी करो बल्कि उसमें भी कमी करो। **(हवाला– तक़वियतुल ईमान, पेज नं. 75, लेखक– इस्माईल देहलवी)**

14. <u>वहाबी/देवबंदी अक़ीदा</u>– नबी हमारे बड़े भाई की तरह हैं। **(हवाला– तक़वियतुल ईमान, पेज नं. 71, लेखक– इस्माईल देहलवी)**

15. <u>वहाबी/देवबंदी अक़ीदा</u>– हुज़ूर मर कर मिट्टी में मिल गए। **(हवाला– तक़वियतुल ईमान, पेज नं. 72, लेखक– इस्माईल देहलवी)**

16. <u>वहाबी/देवबंदी अक़ीदा</u>– अल्लाह झूठ बोल सकता है।

(हवाला–बराहीने क़ातेआ, पेज नं. 10)

17. <u>वहाबी/देवबंदी अक़ीदा</u>– हम नही मानते कि अल्लाह का झूठ बोलना मुहाल (असम्भव) है।

(हवाला– यकरोज़ी, पेज नं. 17, लेखक– मौलवी इस्माईल देहलवी)

18. <u>वहाबी/देवबंदी अक़ीदा</u>– अक्सर आदमी झूठ बोलता है। खुदा ना बोल सके तो आदमी की कुदरत खुदा की कुदरत से बढ़ जाएगी। (हवाला– यकरोज़ी, पेज नं. 145, लेखक– मौलवी इस्माईल देहलवी)

19. <u>वहाबी/देवबंदी अक़ीदा</u>– अल्लाह को बन्दों के कामों की पहले से ख़बर नही होती जब बन्दे अच्छे या बुरे काम कर लेते हैं, तब उसको मालूम होता है। (हवाला– बिगतुल जीरान, पेज नं. 157, लेखक– मौलवी हुसैन अली शागिर्द रशीद अहमद गंगोही देवबंदी)

20. <u>वहाबी/देवबंदी अक़ीदा</u>– दुरूद ताज पढ़ना हराम है। (हवाला– फ़तावा रशीदिया, पेज नं. 162, लेखक– रशीद अहमद गंगोही देवबंदी)

21. <u>वहाबी/देवबंदी अक़ीदा</u>– हाथ में कोई नापाक चीज़ लगी थी उसको किसी ने ज़बान से तीन दफ़ा चाट लिया तो पाक हो जाएगा, मगर चाटना मना है। (हवाला– बहिश्ती ज़ेवर, बाब– नजासत पाक करने का बयान, पेज नं. 80, लेखक– अशरफ़ अली थानवी देवबंदी)

22. <u>वहाबी/देवबंदी अक़ीदा</u>– सेहरा बाँधना और अली बख़्श, हुसैन बख़्श, अब्दुल नबी वगैरह नाम रखना कुफ़्र व शिर्क है।
(हवाला– बहिश्ती ज़ेवर, बाब– कुफ़्र व शिर्क का बयान, पेज नं. 50, लेखक– अशरफ़ अली थानवी देवबंदी)

23. <u>वहाबी/देवबंदी अक़ीदा</u>– मज़लिसे मीलाद में भले सही रिवायतें पढ़ी जाएं तब भी नाजाइज़ है। (हवाला– फ़तावा रशीदिया, पेज नं. 130, 131, लेखक– रशीद अहमद गंगोही देवबंदी)

24. <u>वहाबी/देवबंदी अक़ीदा</u>– मैंने ख़्वाब में देखा कि मुझे हुज़ूर अलैहिस्सलाम पुल सिरात पर ले गए और देखा कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम पुल सिरात से गिरे जा रहे हैं तो मैंने हुज़ूर को गिरने से बचाया। (हवाला– बिगतुल जीरान, पेज नं. 8, लेखक– मौलवी हुसैन अली देवबंदी)

25. <u>वहाबी/देवबंदी अक़ीदा</u>– किसी को दूर से पुकारना और ये समझना कि उस को ख़बर हो गई , यूँ कहना कि खुदा और रसूल चाहेगें तो फ़लाँ काम हो जाएगा कुफ़्र व शिर्क है। (हवाला– बहिश्ती ज़ेवर, बाब– कुफ़्र व शिर्क का बयान, पेज 50, लेखक– अशरफ़ अली थानवी देवबंदी)

26. <u>वहाबी/देवबंदी अक़ीदा</u>– नबी के लिए अताई इल्मे ग़ैब भी मानना शिर्क है। (हवाला– तक़वियतुल ईमान, पेज नं. 18, और फ़तावा रशीदिया, पेज नं. 103)

27. <u>वहाबी/देवबंदी अक़ीदा</u>– मौलवी अशरफ़ अली थानवी के एक मुरीद ने ख़्वाब में इस तरह कलमा पढ़ा "ला इलाहा इल्लल्लाहु अशरफ़ अली रसूलल्लाह" फिर नींद से जागने पर दुरूद शरीफ़ इस तरह पढ़ा "अल्लाह हुम्मा सल्ली अला सैय्यदना व नबीयना व मौलाना अशरफ़ अली"।

ये ख़्वाब जब अशरफ़ अली थानवी को बताया गया तो थानवी ने जवाब दिया "इस वाक़या में तसल्ली थी कि जिस तरफ तुम रूजु करते हो वह बेऔनेही तआला मुत्तबा सुन्नत है"।

(हवाला– अल इमदाद, सफर सं. 1336 हि., पेज नं. 36)

नोटः– मुसलमानों! गौर करो के मना करने की बजाए पढ़ने को जाइज़ ठहराया जा रहा है।

28. <u>वहाबी/देवबंदी अक़ीदा</u>– जिस किसी मुसलमान ने कहा कि मैं हुज़ूर का वास्ता देकर अल्लाह से माँगता हूँ और हुज़ूर अलैहिस्सलाम के वसीले से अल्लाह की तरफ मुतवज्जो होता हूँ ऐसा कहने वाला बहुत बड़ा मुशरिक़ है।

(हवाला– किताबुत्तौहीद, लेखक– मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब नज्दी)

29. <u>वहाबी/देवबंदी अक़ीदा</u>– हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मक़बरे (मज़ार) को देखना ऐसा गुनाह है जैसे बुतो (मूर्ती) को देखना।

(हवाला– किताबुत्तौहीद, लेखक– मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब नज्दी)

30. <u>वहाबी/देवबंदी अक़ीदा</u>– मोहर्रम में ज़िक्रे शहादते हुसैन करना अगरचे बरिवायते सही हो या सबील लगाना, शर्बत पिलाना या चन्दा सबील और शर्बत में देना या दूध पिलाना सब ना दुरूस्त और तस्बीहे रवाफिज़ की वजह से हराम है। **(हवाला– फतावा रशीदिया, पेज नं. 139, लेखक– रशीद अहमद गंगोही देवबंदी)**

31. <u>वहाबी/देवबंदी अक़ीदा</u>– हिन्दू जो प्याऊ पानी के लगाते है सूदी रूपया सर्फ़ करके, मुसलमानों को उसका पानी पीना दुरूस्त है। **(हवाला– फतावा रशीदिया, पेज नं. 576, लेखक– रशीद अहमद गंगोही देवबंदी)**

32. <u>वहाबी/देवबंदी अक़ीदा</u>– उलमाए देवबंद ने हमेशा यज़ीद की हिमायत की है। हज़रत क़ारी तय्यब साहब ने उन्हें मुत्तक़ी (पहरेज़गार) और अमीरूलमुमिनीन (मोमिनो का सरदार) के लक़ब से याद किया है। **(हवाला– इज़हारे हक, लेखक– मौलवी नज़र मुहम्मद क़ासिमी मतबूआ मकतबा तय्यबा देवबंद)**

33. <u>वहाबी/देवबंदी अक़ीदा</u>– सैय्यिदना हुसैन के साथ "इमाम"

का लफ़्ज़ (यानी इमाम हुसैन) कहना शीअत (शियों का तरीक़ा) है। **(हवाला– नवाए इस्लाम, पेज नं.– 20 (1407 हि.), लेखक–अब्दुस्सलाम वस्तवी)**

34. <u>वहाबी/देवबंदी अक़ीदा</u>– जहाँ तक यज़ीद को **"रहमतुल्लाहि अलैह"** कहने का तअल्लुक है तो यह न सिर्फ जाइज़ बल्कि मुस्तहब (अच्छा) है। **(हवाला– नवाए इस्लाम, पेज नं 51 (1407 हि.) लेखक– अब्दुस्सलाम वस्तवी)**

35. <u>वहाबी/देवबंदी अक़ीदा</u>– सवाल– क्या यज़ीद को अमीरूल मोमिनीन ख़लीफतुल मुस्लिमीन कह सकते हैं? जवाब– कह सकने की बात ही क्या है वह तो हकीकत में थे। **(हवाला– मन्कूल अज़ दारूल इफ़्ता हयातुल उलूम मुरादाबाद, यू0पी0, इण्डिया)**

नोट– यज़ीद के मुताल्लिक ये फ़तवा देवबंदी मुफ़्ती हबीबुर्रहमान ख़ैराबादी ने 29 सफर 1395 हि. यानी 5 मार्च 1975 को जारी किया।

ये तो थे वहाबियों/देवबंदियों के कुछ अक़ीदे। इनके और ढेरों कुफ़्री अक़ीदो को जानने के लिए ज़रूर पढ़िए हमारी ज़बरदस्त किताब **"सुन्नी और वहाबी में फ़र्क़"**।

जो हज़रात सुबूत देखना चाहते हैं वो हमारी वेबसाइट पर देखे या WANT PROOF लिखकर **iamsunni999@gmail.com** पर email भेजें।

<u>तबलीग़ी जमाअत का फ़ितना</u>– अल्लाह के अताई इल्मे ग़ैब के ज़रिए हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हम मुसलमानो को पहले ही तबलीग़ी जमाअत के पैदा होने की ख़बर दे दी थी। **हदीस–** हज़रत अली रज़िअल्लाहो तआला अन्हो से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि अख़ीर ज़माने (नबी के बाद का ज़माना) में कुछ ऐसे लोग पैदा होगें जो बाएतेबार उम्र कम होगें, अकल के पैदल होगें, इनकी बातें सबसे बेहतर होगीं लेकिन ईमान इनके हलक़ से नीचे नहीं उतरेगा दीन से ऐसे निकले हुए होगें जैसे तीर शिकार से निकल जाता है। तोतुम उन्हे जहाँ पाओ क़त्ल करो, इनके क़त्ल करने में हर क़त्ल करने वाले को क़यामत के रोज़ सवाब मिलेगा। **(हवाला– बुख़ारी शरीफ़, जिल्द 2, पेज नं 1024)**

और इसी पेज पर इसी के बाद की हदीस में यह भी है। यानी तुम लोग अपनी नमाज़ रोज़ों को इनके नमाज़ और रोज़ों के मुकाबले निहायत कमतर ख़याल करोगें।

सुन्नियो! ज़रा ध्यान दो, आज यह सारी निशानियाँ वहाबियों, देवबंदियों, तबलीग़ी जमाअत वालों में भरपूर तरीक़े से पाई जाती हैं, और इस हदीस से यह भी मालूम हुआ कि इन्सान की ज़ाहिरी नमांज़, रोज़े को देखकर प्रभावित

नहीं होना चाहिए क्योंकि यह चीजें बातिल और मक्कार फिरक़ों में अहले हक़ से ज़्यादा करीने क़यामत पाई जायेंगी।

<u>क्यों बनी तबलीग़ी जमाअत</u>– वहाबियों/देवबंदियों के गंदे अक़ीदे को फैलाने के लिए तबलीग़ी जमाअत बनाई गई। खुद तबलीग़ी जमाअत के बानी (संस्थापक) मौलवी इलियास कांधुलवी लिखते हैं, "हज़रत अशरफ़ अली थानवी रहमतुल्लाह अलैह ने बहुत बड़ा काम किया है, बस मेरा दिल चाहता है कि तालीम तो उनकी हो और तरीक़ये तबलीग़ मेरा हो कि इस तरह उनकी तालीम आम हो जाएगी"। **(हवाला– मलफ़ूज़ात मौलाना इलियास)**

मुसलमान भाईयो! अगर अभी भी यक़ीन ना हो रहा हो तो एक और सुबूत देखें। तबलीग़ी जमाअत के बहुत बड़े मौलाना मन्जूर नोमानी लिखते हैं "कि हम बड़े सख़्त वहाबी हैं। हमारे लिए इस बात में कोई ख़ास कशिश न होगी कि यहाँ हज़रत की क़ब्र मुबारक है"।

(हवाला– सवानेह मौलाना युसूफ़, पेज नं. 192)

सुन्नी भाईयो! ये जमाअत वाले इतनी सफाई से झूठ बोलते हैं कि जिसे आम मुसलमान नहीं पकड़ सकता। जैसे जब कोई सुन्नी इनके अक़ीदे की सच्चाई दूसरों को बताता है, तब ये अपने बचाव में बड़े भोले बनकर कहेंगे कि भाई आपस मे झगड़ा मत करो। ये झगड़ा तो बस दो मौलवियों आलाहज़रत और अशरफ़ अली थानवी के बीच का है। दोनों एक साथ एक ही मदरसा में पढ़ते थे, आपस में कुछ मसलों पर इख़्तेलाफ़ (झगड़ा) हो गया है, लेकिन हमें इससे क्या मतलब, हम तो सिर्फ नमाज़, रोज़े की तबलीग़ कर रहे हैं।

ऐ सुन्नी मुसलमानो, संभल जाओ, ये तबलीग़ी जमाअत वालों का बहुत बड़ा झूठ है। लगे हाथ आप इसकी भी सच्चाई जान लीजिए–

<u>आलाहज़रत और अशरफ़ अली थानवी एक साथ नहीं पढ़े</u>– क्योंकि एक साथ पढ़ने का मतलब होता है कि मदरसा और ज़माना ए तालिबे इल्मी एक हो लेकिन यहाँ दोनो चीज़ें अलग–अलग हैं।

<u>अलग–अलग मदरसा</u>– आलाहज़रत ने अपने निसाब की तालीम अपने वालिद मोहतरम से मुकम्मल की। **(हवाला– सवानेह आला हज़रत, पेज नं.–91)** जबकि थानवी ने निसाब की तालीम देवबंद से मुकम्मल की। **(हवाला– अशरफ़ुस्सवानेह, पेज नं. 57)**

<u>अलग–अलग ज़माना</u>– आलाहज़रत ने आठ साल की उम्र में **"हिदायतुन्नहो"** की अरबी शरह लिख दी और तेरह साल दस माह की उम्र में 14 शाबान 1286 हिजरी यानी (19 नवम्बर 1869 ई0) को दस्तारे फज़ीलत

से नवाज़े गये। इसी दिन आलाहज़रत ने मसला रज़ाअत के मुताल्लिक पहला फ़तवा दिया। **(हवाला–सवानेह आलाहज़रत, पेज नं. 92)**

जबकि अशरफ़ अली थानवी आख़िर ज़ीक़ादह 1295 हिजरी (1878 ई0) में दारूल उलूम देवबंद में दाखिल हुए और पाँच साल तक मशग़ूले तालीम रहकर 1301 हिजरी (1883 ई0) में फ़राग़त हासिल की।

(हवाला– अशरफ़ुस्सवानेह, पेज नं. 57)

मुसलमानो ध्यान दो कि आलाहज़रत 1286 हि0 को अपनी पढ़ाई ख़त्म करते हैं तो अशरफ़ अली थानवी 1295 हि0 में दारूल उलूम देवबंद में दाख़िला कराकर पढ़ाई शुरू करते हैं, इसलिए 1286 हि0 और 1295 हि0 के दरम्यान नौ साल का अन्तर है। मतलब आलाहज़रत की पढ़ाई ख़त्म होने के नौ साल बाद थानवी ने पढ़ना शुरू किया इसलिए ये कहना कि दोनों एक साथ पढ़े हैं बहुत बड़ा झूठ है, झूठ है, झूठ है।

मुसलमान भाईयो, जान लो कि वहाबियों, देवबंदियों, तबलीगियों के पास आलाहज़रत इमाम अहमद रज़ा का कोई तोड़ नहीं इसलिए ये सिर्फ़ हम सुन्नी मुसलमानो का हौसला तोड़ने के लिए झूठ बोलते हैं, इसलिए आज ही इन मक्कारों को अपनी मस्जिदों से धक्के मारकर बाहर निकालिये।

<u>क़ादियानी (अहमदिया) का फ़ितना</u>– क़ादियानी फ़ितने को पैदा करने का सेहरा देवबंदियो के सर बंधा है। हुआ यूँ कि पंजाब के ज़िला गुरदासपुर में एक बस्ती क़ादियान है। वहाँ पर एक शख़्स मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी पैदा हुआ। इसने देवबंदियों की किताब तहजीरून्नास को पढ़ा जिसमे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद दूसरा नबी पैदा होने का अक़ीदा दिया गया था। देवबंदी कोई गुल खिलाते इससे पहले मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी ने नबी होने का दावा कर दिया।

हम सुन्नियों ने **"वलाकिन रसूलल्लाहे व ख़ातमन्नबिय्यीन"** का मतलब यही समझा है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद कोई दूसरा नबी किसी भी ज़माने मे नहीं पैदा होगा। इस आयत का मआना ख़त्मे ज़मानी है।

लेकिन देवबंदी कज़्ज़ाब ने आयत का मआना ख़त्मे ज़मानी को आवाम का ख़याल बताया और आयत का नया मआना ख़त्मे ज़ाती गढ़ा। देवबंदियों के पेशवा मौलवी क़ासिम नानौतवी ने अपनी किताब **"तहजीरून्नास"** के पेज **नं.–4** पर साफ–साफ लिख दिया कि "अवाम के ख़याल में तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आख़िरी नबी हैं। मगर इल्म वालों के नज़दीक ये

मअ़ना दुरूस्त नहीं फिर मक़ामे मदह में "वलाकिन रसूलल्लाहे व ख़ातमन्नबिय्यीन" क्योंकर सही हो सकता है।"

सुन्नियो ध्यान दो कि देवबंदियों की इस इबारत में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आख़िरी नबी होने को अवाम का ख़याल बताया और आयत के माअ़ने को ख़त्मे ज़ाती पर महमूल करके हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद और नबी पैदा होने का दरवाज़ा खोला। वो अलग बात है कि देवबंदियों की इस मेहनत की कमाई को क़ादियानी ले उड़ा और नबी बन बैठा।

खुद क़ादियानी दज्जाल ने अपनी किताब "ख़ातमन्नबिय्यीन" के पेज नं. 16 पर लिखा है कि "आठवीं शहादत इस ज़माने के मौलाना क़ासिम नानौतवी मोहद्दिस ए देवबंद जिला सहारनपुर अपनी किताब तहजीरून्नास में फ़रमाते हैं कि बिल्फ़र्ज़ बाद ज़माने नबवी भी कोई नबी पैदा हो तो फिर भी ख़ातमीयते मोहम्मदी मे कुछ फर्क़ नही पड़ेगा"।

ऐ सुन्नी भाईयो आप खुद देखिये कि काफ़िर क़ादियानी अपनी किताब मे कितनी खुशी से देवबंदियों की किताब **"तहजीरून्नास"** का हवाला अपने आप को नबी साबित करने के लिए पेश कर रहा है।

चकड़ालवी (अहले कुरआन) का फ़ितना– वहाबियत से पैदा हुए इस गुमराह फ़ितने का बानी **"अब्दुल्लाह चकड़ालवी"** है। ये अरबी और अंग्रेज़ी ज़बान (भाषा) का ज़बरदस्त माहिर था। इसने कहा कि मौजूदा हदीसें झूठी और गलत हैं क्योंकि आज जो हदीस की किताबें मिलती हैं वो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के विसाल (मृत्यु) के एक सदी गुज़रने के बाद लिखी गई हैं और ये किताबें लिखने वाले सब ईरानी हैं जिन्होंने अपने मन से गढ़–गढ़ कर हदीसों के दफ़्तर तैयार किये। हाँ, कुरआन मजीद महफ़ूज़ है। हम सिर्फ़ कुरआन को हक़ मानते हैं जो कुछ हमें कुरआन से समझ में आएगा हम सिर्फ़ वही अक़ीदा रखेगें।

चकड़ालवी फ़िर्क़े ने अपनी नई नमाज़ बनाई जो सिर्फ़ तीन वक़्त की होती है और हर वक़्त मे सिर्फ़ दो रकअत पढ़ते है। चकड़ालवियों का अक़ीदा है कि मुसलमानों की मौजूदा पाँच वक़्त की नमाज़ कुरआन के मुताबिक़ नहीं। सिर्फ़ कुरआन की सिखाई हुई नमाज़ पढ़नी फर्ज़ है। इसके अलावा कोई और नमाज़ पढ़ना कुफ़्र व शिर्क है। **(हवाला– मजाहेबुल इस्लाम, पेज नं. 680)**

मौदूदी (जमाअते इस्लामी) का फ़ितना– वहाबियत से पैदा हुए इस गुमराह फितने का बानी अबुल आला मौदूदी है। ये लोग अपने आप को जमाते इस्लामी भी कहते हैं। ये लोग भी देवबंदियों की तरह मोहम्मद बिन

अब्दुल वहाब नज्दी और इस्माईल देहलवी को अपना इमाम और पेशवा मानते हैं। इस जमाअत को बनाने वाले अबुल आला मौदूदी ने तमाम नबी ख़ासकर हज़रत नूह अलैहिस्सलाम, हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम, हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम, हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की शान में बेअदबी की और कई सहाबा ख़ासकर हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़, हज़रत उमर फ़ारूक़, हज़रत उस्मान ग़नी और ख़ालिद बिन वलीद रिज़वान उल्लाही तआला अलैहिम अजमईन पर नुक़्ता–चीनी करके उनकी तौहीन की। मौदूदियों का अक़ीदा है कि तक़दीर पर ईमान लाना ज़रूरी नहीं। इनका अक़ीदा है कि नबियों के नफ़्स भी शरारत करने वाले होते हैं। इनका अक़ीदा है कि काफ़िरों के देवी–देवता पिछले ज़माने के नबी और रसूल हैं। जैसा की मौदूदियों (जमाअते इस्लामी) की किताब में लिखा है "सब जगह अल्लाह के रसूल, अल्लाह की किताबें लेकर आये हैं और बहुत मुमकिन है कि बुद्ध, कृष्ण, राम, कंफूश, जरदश्त, भानी, सुकरात, फ़ीफ़ा गौरस वगैरह इन्ही रसूलों मे से हों। **(हवाला– तफ्हीमात, जिल्द 1, पेज नं. 124)**

<u>नेचरी फ़ितना</u>– वहाबियत से निकला ये भी एक गुमराह फ़ितना है। नेचरी अज़ाबे क़ब्र, फ़रिश्ते, जन्नत, जहन्नम को नही मानते और मोअजिज़ात अम्बियाए कराम अलैहिमुस्सलाम का इनकार करते हैं।

<u>सुलहकुल्लियों का फ़ितना</u>– इस गिरोह के लोग सभी फ़िर्क़ों को हक़ पर समझते हैं। ये वहाबी, देवबंदी, तबलीग़ी जमाअत, शिया, क़ादियानी, जैसे गुमराह फ़िर्क़ों के पीछे नमाज़ पढ़ लेते हैं और सब के यहाँ शादी–विवाह कर लेते हैं। ये किसी को काफ़िर नहीं मानते। इन लोगों का अक़ीदा है कि कलमा और नमाज़ पढ़ने वाला हर फ़िर्क़ा जन्नती है। हालाँकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हदीस है कि मेरी उम्मत 73 फ़िर्क़ों (गिरोह) में बँट जाएगी उनमें से सिर्फ एक जन्नती होगा बाकी सब जहन्नमी होगें।

(हवाला– मिश्कात शरीफ, पेज नं. 30)

सुलहकुल्लियत के बारे मे ख़लीफ़ा ए आला हज़रत हुजूर हश्मत रज़ा ख़ान रहमतुल्लाह अलैह फ़रमाते हैं "सुलहकुल्ली कोई मुस्तक़िल मज़हब नहीं बल्कि हर उस शख़्स को कहते हैं जो बदमज़हबों, बेदीनों पर रद्द व तर्द से अपनी नाराज़गी ज़ाहिर करे"। **(हवाला– रद्दे सुलह कुल्लियत, पेज 491)**

सुलह कुल्लियत क्या है? इसका जवाब देते हुए जांनशीन मुफ़्ती ए आज़म हिन्द हज़रत अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मोहम्मद अख़्तर रज़ा ख़ान अज़हरी (ताज़उश्शरीया) इरशाद फ़रमाते हैं– "जब से नदवा वालों ने ये नारा

दिया कि वहाबी, देवबंदी, राफ़्ज़ी और सुन्नी सब से इत्तेहाद फर्ज़ है और सब एक हैं अक़ीदतन"। जब इन्होंने ये अक़ीदा बनाया तो उल्मा ए अहले सुन्नत व जमाअत ने इनका रद्द किया और सबसे बड़ा हिस्सा आलाहज़रत व मौलाना शाह अब्दुल क़ादिर साहब बदायूँनी रहमतुल्लाह अलैह का रहा"।

आज सुन्नियों को इस तरह के लोगों से बहुत ज़्यादा नुक़सान हो रहा है क्योंकि ये वो लोग हैं जहाँ जैसा देखा वहाँ उसी तरह ढल गए मतलब गंगा गए तो गंगाराम और जमुना गए तो जमुनादास।

वहाबियत की शाखें

मुसलमान भाइयो अभी तक आपने देवबंदी, तबलीग़ी जमाअत, क़ादियानी, अहले हदीस, अहलेकुरआन (चकड़ालवी), मौदूदी (जमाअते इस्लामी), नदवी, नेचरी जैसे गुमराहों के बारे मे जाना और इनका एक दूसरे से रिश्ता देखा।

इन सब की ट्रेन वहाबी नाम के स्टेशन पे जाकर रूकती है। इन फ़ितनों की और अधिक जानकारी के लिए जरूर पढ़िये हमारी किताब **"सुन्नी और वहाबी मे फ़र्क़"**।

सुन्नी मुसलमान भाईयो, आपको मालूम होना चाहिए कि आलाहज़रत इमाम अहमद रज़ा के दौर में वहाबियत कई नए फ़ितनों को पैदा कर चुकी थी और वहाबियत के अलावा दूसरे बातिल गिरोह जैसे– राफ़जी, दहरिया, फ़लास्फ़ा, ख़ारजी, तफ़जीली, यहूद, नस्सारा, हुनूद आर्य वगैरह इस्लाम की जड़ों को खोखला करने मे लगे हुए थे। उस समय आलाहज़रत ने चौमुखी लड़ाई लड़कर सबके दाँत खट्टे कर दिये। आलाहज़रत ने तक़रीर के साथ–साथ तहरीर के अम्बार लगा दिये। अब कई मुसलमान भाई सोच रहे होंगे कि आख़िर ये–

आलाहज़रत इमाम अहमद रज़ा कौन है?– तो मुसलमानो जान लो कि चौदहवीं सदी हिजरी के मुजद्दिद, वहाबियत की आँधी से हम मुसलमानों का ईमान बचाने वाले आलाहज़रत रज़िअल्लाहु अन्हो जिन्होंने 1400 से ज़्यादा किताबें लिखकर पूरी दुनिया के मुसलमानो की रहनुमाई की

● ये वही आलाहज़रत हैं कि जब देवबंदियों ने कहा कि "अल्लाह झूठ बोल सकता है" तब इस घिनौने अक़ीदे के रद्द में आलाहज़रत ने
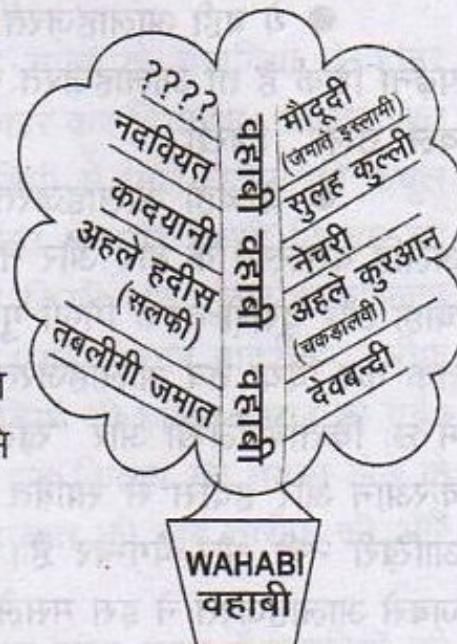
"सुबहानस्सुब्बहु" नाम की किताब लिखकर देवबंदियों के इस अक़ीदे की धज्जियाँ बिखेर दीं। आज इस किताब को लिखे सौ (100) साल से ज़्यादा हो गया पर इस किताब के उन दो सौ (200) सवालों का जवाब आज तक वहाबी देवबंदी नहीं दे पाए और ना कयामत तक दे पाँएगें और आलाहज़रत ने कुरआन और हदीस से साबित किया कि "अल्लाह झूठ जैसे ऐबों से पाक है"।

● ये वही आलाहज़रत हैं कि जब वहाबियों ने कहा कि दुरूद ताज पढ़ना शिर्क है तो आलाहज़रत ने इस नज़रिए के रद्द के लिए **"अल अमनो वल उला"** लिखी।

● ये वही आलाहज़रत हैं कि जब देवबंदियों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद और नबी के पैदा होने का अक़ीदा अवाम में फैलाना चाहा और दूसरी तरफ मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी ने नबी होने का दावा तक कर दिया तब आलाहज़रत ने मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी के रद्द में छः किताबें लिखीं और **"ख़त्मेनुबूव्वत"** के नाम से किताब लिखी, जिसमें कुरआन और हदीस से साबित किया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आख़िरी नबी और पैग़म्बर हैं। आपके बाद कोई दूसरा नबी नहीं आएगा। जबसे आलाहज़रत ने इस मसले पर क़लम चलाया है तब से लेकर आज तक देवबंदियों ने नये नबी के पैदा होने का ख़्वाब ही देखना छोड़ दिया।

● ये वही आलाहज़रत हैं कि जब वहाबियों ने शशमिस्ल का फ़ितना फैलाया और ऐलान किया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम, हज़रत आदम, हज़रत इब्राहीम, हज़रत नूह अलैहिमुस्सलाम जैसे अम्बिया की तरह ज़मीन के बाक़ी हिस्सों में और भी मोहम्मद, आदम, इब्राहीम अलैहिमुस्सलाम वग़ैरह हैं तो आलाहज़रत ने इसके रद्द मे **"तम्बीउल जुहाल"** लिखकर इस फ़ितने को हमेशा–हमेशा के लिए दफ़न कर दिया।

● ये वही आलाहज़रत हैं कि जब मशहूर अमेरिकी वैज्ञानिक अलबर्ट आइन्सटीन ने कहा कि 17 दिसम्बर 1919 ई0 को छः ग्रह एक सीध में आकर सूरज की चुम्बकीय तरंगों को अपनी तरफ खीचेंगे जिससे पृथ्वी पर तबाही मच जाएगी। इस झूठी भविष्यवाणी का रद्द आलाहज़रत ने कुरआन, फिज़िक्स और एस्ट्रोनोमी से किया जो कई अख़बारों में छपा और लोगों का डर दूर हुआ।

● ये वही आलाहज़रत हैं जिन्होंने कैप्लर, न्यूटन और डारविन की कई थ्योरी को कुरआन, हदीस और साइंस से ग़लत साबित किया। इनकी मनगढ़ंत थ्योरी के ख़िलाफ़ आलाहज़रत ने **"फौज मुबीन दर रद्द हरकते ज़मीन"** और **"नुज़ूल आयतें फ़ुरकान बसुकून ज़मीनो आसमान"** जैसी किताबें लिखी।

● ये वही आलाहज़रत हैं कि जब देवबंदियों ने कुरआन का ग़लत उर्दू तर्जमा लिखा। और उसमें अल्लाह व उसके रसूल कि शान में कई जगह गुस्ताख़ी भरे तर्जमे कर डाले कि अगर कोई उसे सही मान ले तो काफ़िर और मुरतद हो जाए। तो उस वक़्त आलाहज़रत ने कुरआन का सही और सबसे आसान तर्जमा लिखा जो **"कंज़ुल ईमान"** के नाम से जानी जाती है। (इसकी कुछ झलकियाँ आपको आगे देखने को मिलेगी)

● ये वही आलाहज़रत हैं कि जब नज्द के वहाबियों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इल्मे ग़ैब का इन्कार कर दिया था। आलाहज़रत जब हज के लिए गए तो वहीं पर नज्दी वहाबियों से मिले चैलेंज को कबूल किया और सिर्फ आठ घण्टे में बुख़ार की हालत मे बग़ैर किसी किताब की मदद के **"दौलते मक्किया"** नाम की किताब लिखी और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इल्मे ग़ैब को साबित किया। यह किताब बादशाह "शरीफ़ अली पाशा" के दरबार में पेश की गई तो वहाबियों की हालत ख़राब हो गई। वहाबी इसका जवाब आज तक नहीं दे पाए। इस किताब की नक़ल लेने के लिए पूरे अरब के उलेमा टूट पड़े और आलाहज़रत की ख़ूब तारीफ़ की और अपना इमाम और पेशवा कुबूल किया।

नोट– ये वाक़या 1906 ई0 का है उस वक़्त अरब में वहाबियों की हुकूमत नहीं थी। वहाबी फ़ितने का फैलाव सिर्फ़ नज्द तक ही था और मक्का व मदीना शरीफ़ पर सुन्नी तुर्कियों की हुकूमत थी।

● ये वही आलाहज़रत हैं जिन्होंने देवबंदियों के पेशवाओं और मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी के ख़िलाफ़ कुफ़्र का फ़तवा दिया। आलाहज़रत ने फ़रमाया कि अल्लाह और उसके रसूल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तौहीन और ज़रूरी अक़ीदा **"ख़त्मे नुबूव्वत"** का इन्कार करने की वजह से ये पाँचो (अशरफ़ अली थानवी, रशीद अहमद गंगोही, क़ासिम नानौतवी, ख़लील अहमद अम्बेठवी, मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी) काफ़िर व मुरतद और इस्लाम से ख़ारिज हैं। फिर आलाहज़रत का यह फ़तवा तसदीक़ के लिए अरब पहुँचा तो मक्का मुअज्जमा के 20 और मदीना मुनव्वरा के 13 ज़बरदस्त उलमा–ए–कराम ने भी एक होकर इन पाँचों को काफ़िर क़रार दिया। आलाहज़रत का यह फ़तवा **"हुसामुल हरमैन"** के नाम से छपा जिसे आप आज भी आसानी से किताब की दुकान से ख़रीद सकते हैं।

● ये वही आलाहज़रत हैं कि जब वहाबी/देवबंदी कह रहे थे कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपने विसाल (मृत्यु) तक की ख़बर नहीं

थी तब गुलामे मुस्तफ़ा आलाहज़रत ने अपने विसाल की ख़बर 4 महीने 22 दिन पहले ही कुरआन की आयत से निकालकर बता दिया फिर दुनिया ने देखा कि अल्लाह के इस वली और चौदहवीं सदी हिजरी के मुजद्दिद ने 25 सफर 1340 हि0 (18,अक्टूबर,1921 ई0) को इस दुनिया से पर्दा कर लिया। **(हवाला– सवानेह आलाहज़रत)**

मुसलमान भाईयो! आपने देखा कि **"गुलामे मुस्तफ़ा आलाहज़रत इमाम अहमद रज़ा"** ने हर बातिल और मक्कार फ़िर्के की धज्जियाँ बिखेर दीं। आलाहज़रत की वजह से देवबंदियों वहाबियों के यहाँ सन्नाटा छा गया। देवबंदियों के ख़्वाहिशों के उल्लू सिसक–सिसक कर मर गए।

आलाहज़रत के हैरतअंगेज़ कारनामों के बारे में और ज़्यादा जानने के लिए ज़रूर पढ़िये हमारी किताब **"सुन्नी और वहाबी मे फ़र्क"**।

आज देवबंदियों/वहाबियों ने अपनी तादाद बढ़ाने और अपने कुफ़्री अक़ीदे को आम मुसलमानो से छुपाने का एक नया तरीक़ा निकाला। पहले इन्होंने तबलीगी जमाअत बनाई फिर उसमें नए उम्र के जोशीले लड़कों को भर्ती किया। फिर इन नए लड़को को समझाया गया कि आज के मौजूदा मुसलमान दीन से भटक कर शिर्क और बिद्अत वाले कामों को करने लगे हैं। इस उल्टी पढ़ाई को पढ़ने के बाद इन बेवक़ूफ़ लड़को ने सबको सुधारने का ठेका अपने ऊपर ले लिया। फिर ये लड़के गलियों मे निकल पड़े वहाबियत की बीमारी फैलाने के लिए। फिर इन जमातियों ने सुन्नत को बिद्अत और जाइज़ कामों पर नाजाइज़ होने का फ़तवा लगाना शुरू कर दिया। इन्होंने मिलाद, फ़ातेहा, सलातो सलाम, जश्ने ईद मिलादुन्नबी, वसीला, ताज़ीमे नबी, ज़ियारते क़ब्र, अंगूठा चूमना जैसे अच्छे काम जो कुरआन और हदीस से साबित हैं को शिर्क, बिद्अत और हराम कहा। जिसकी वजह से घर–घर मे लड़ाइयाँ शुरू हो गईं। आज वहाबियों, देवबंदियों, तबलीगियों की वजह से अच्छे कामों से चिढ़ने की बीमारी तेजी से फैल गई।

आज हर सुन्नी मुसलमान की ये ज़िम्मेदारी है कि वो इन बीमारियों से खुद बचे और अपने सुन्नी भाईयों को भी बचाए। इन बीमारियों को ठीक करने की दवा आगे लिखी जा रही है। इंशाअल्लाह मुझे उम्मीद है कि अगर आपके सामने वाले मुख़ालेफ़ीन के अन्दर राई के दाने के बराबर भी मोहब्बत बाक़ी होगी तो वह ज़रूर दोबारा ईमान वाला बन जाएगा। अब आप एक–एक करके इन बीमारियों को समझिये और उसका इलाज सीखिए–

<u>बिद्अत बोलने की बीमारी</u>– वहाबी/देवबंदी/तबलीगी, ये अल्लाह

के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और औलिया–ए–कराम के सख़्त दुश्मन हैं इसलिए जब किसी को वहाबी नाम की बीमारी लगती है तो वह सबसे पहले नबी और औलिया अल्लाह की ताज़ीम से चिढ़ने लगता है फिर उनसे जुड़े हर अच्छे काम (जैसे–मिलाद, फ़ातेहा, सलातो सलाम, उर्स, वसीला) पर बिद्अत का फ़तवा लगाना शुरू कर देता है। हालाँकि इन जाहिलों को बिद्अत का सही तलफ़्फ़ुज़ तक नही मालूम कि बिद्अ़त को बिद्दत बोलते हैं। बहरहाल अब आप इस मसले को कुरआन और हदीस से समझे कि आख़िर सच्चाई क्या हैं?

बिद्अत किसे कहते हैं– लुग़त मे नई चीज को बिद्अ़त कहते हैं और शरअ़ की बोली में बिद्अ़त वह चीज़ है जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ज़माने के बाद ईजाद हुई। बिद्अ़त मुख्यतः दो तरह की होती है 1. बिद्अ़ते हसना (अच्छी बिद्अ़त), 2. बिद्अ़ते सईया (बुरी बिद्अ़त)

सुबूत–हदीस– सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स इस्लाम में किसी अच्छे तरीक़े को राइज़ करेगा तो उसको अपने राइज़ करने का सवाब मिलेगा और उन लोगों के अमल करने का भी जो उसके बाद उस तरीक़े पर अमल करते रहेगें और अमल करने वालों के सवाब मे कोई कमी न होगी और जो इस्लाम मे किसी बुरे तरीक़े को राइज़ करेगा तो उस शख़्स पर उसके राइज़ करने का भी गुनाह होगा और उन लोगों के अमल करने का भी गुनाह होगा जो उसके बाद उस तरीक़े पर अमल करते रहेगें और अमल करने वालों के गुनाहों मे कोई कमी न होगी। **(हवाला– मिश्कात शरीफ़, पेज नं. 33 और मुस्लिम शरीफ़, पेज 32)**

नोट– इस हदीस मे मालूम हुआ कि बिद्अ़त दो तरह की होती हैं, अच्छी और बुरी। अच्छी बिद्अ़त का इनकार करना इस हदीस शरीफ़ का इनकार करना होगा।

हदीस– मिश्कात बाब क़यामे शहरे रमज़ान में है कि हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़िअल्लाहो अन्हो ने अपने ज़माना ए ख़िलाफ़त मे तरावीह की बक़ायदा जमाअत करने का हुक्म दिया और तरावीह की जमाअत को देखकर फ़रमाया **"यह तो बड़ी अच्छी बिद्अ़त है"**।

इस हदीस से भी साबित हुआ कि अच्छी बिद्अ़त होती है। अगर मान लिया जाए कि हर बिद्अत गुमराही है तो देवबंदियों बताओ कि तुम उमर फ़ारूक़ रज़िअल्लाहो अन्हो को क्या कहोगे? उनके ऊपर कौन सा फ़तवा लगाओगे? क्या तुम (मआ़ज़अल्लाह) उन्हे भी गुमराह कहोगे?

रही यह बात की हदीस शरीफ़ मे **"कुल्लू बिद्अ़तिन ज़लालतुन"**

(तर्जमा– हर बिद्अ़त गुमराही है।) तो इसके बारे मे हज़रत मुल्ला अली क़ारी रहमतुल्लाह अलैह लिखते हैं कि यहाँ हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का क़ौल मख़सूस है। यानी बिद्अ़त से मुराद बिद्अते सईया (बुरी बिद्अ़त) है। **(हवाला– मिरकात, जिल्द 1, पेज नं. 176)**

इसी तरह हज़रत शेख मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह ने भी लिखा है। देखिये– **(अशअतुल्लम्आ़त, जिल्द 1, पेज नं. 125)**

इसलिए यहाँ हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का क़ौल है कि हर बुरी बिद्अ़त गुमराही है ना कि अच्छी बिद्अ़त।

<u>बिद्अ़त का रिवाज</u>– सुन्नी मुसलमान भाईयों आज इस्लाम से जुड़ी हर चीज़ में बिद्अ़त शामिल है और ये काम वहाबी/देवबंदी भी करते हैं, आइए अब हम आपको दिखाते हैं दीन मे पैदा हुई नई बिद्अ़त–

1. ईमान– आज मुसलमान का बच्चा–बच्चा ईमाने मुजमल और ईमाने मुफ़स्सल याद करता है। ईमान की यह दो क़िस्में और उनके यह दोनो नाम बिद्अ़त हैं। कुरूने सलासा (पहले तीन ज़माने) मे इसका पता भी नहीं चलता।

2. कलमा– हर मुसलमान छः कलमे याद करता है। यह छः कलमों के नाम, उनकी तादाद, उनकी तरतीब सब बिद्अ़त है। शुरू के तीन ज़माने में इसका पता भी नही चलता।

3. कुरआन– कुरआन शरीफ़ का तीस पारा बनाना, उसमें रूकूअ़ क़ाइम करना, इस पर ज़बर–ज़ेर वग़ैरह लगाना और आयतों का नम्बर लगाना, उसको छपवाना सब बिद्अ़त है।

4. हदीस– हदीस शरीफ़ को किताबी शक्ल में जमा करना, हदीस की क़िस्मे बनाना, इन किस्मों में तरतीब देना फिर उनके अहकाम मुकर्रर करना। गर्ज़ेकि सारा फ़ने हदीस ऐसी बिद्अ़त है जिसका कुरूने सलासा में ज़िक्र भी ना था।

5. उसूले हदीस– यह फ़न बिल्कुल बिद्अ़त है। इसका नाम इसके सारे क़ायदे कानून सब बिद्अ़त हैं।

6. फिक़ह्– इस पर आज दीन का दारोमदार है, लेकिन यह शुरू से आख़िर तक बिद्अ़त है।

7. नमाज़– नमाज़ में ज़बान से नीयत करना, रमज़ान में बीस रकात तरावीह पर हमेशगी करना बिदअ़त है। खुद उमर फ़ारूक़ रज़िअल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि यह बड़ी अच्छी बिद्अ़त है।

8. रोज़ा–रोज़ा रखने की औरइफ़्तार की नीयत ज़ुबान से करना बिद्अ़त है।

9. हज– जहाज़, मोटर, रेल के ज़रिए हज करना और मोटरों से अरफ़ात जाना बिद्अ़त है। उस ज़माने में इनके ज़रिए हज नहीं होता था।

10. चार तरीके– शरीअ़त के चार तरीक़े (हन्फ़ी, शाफ़ई, मालिकी, हम्बली) बिद्अ़त है।

बोलो मुसलमान भाइयो, क्या बग़ैर बिद्अ़त के दीन और दुनिया का काम चल सकता है। नहीं बिल्कुल नहीं। बेचारे मीलाद, फ़ातेहा और सलाम ने ही सारी ग़लतियाँ की हैं क्या?

सुन्नियो जागो, उठो और सवाल पूछो– **1.** ऐ देवबंदियो ऊपर बताई गई दस बिद्अ़तों पर तुम भी अमल करते हो इसलिए तुम भी बिद्अ़ती हुए। **2.** देवबंदियो तुम्हारी किताबो में लिखा है कि ईद में गले मिलना बिद्अ़त है लेकिन बहुत से देवबंदी ईद पर गले मिलते है इसलिए तुम भी बिद्अ़ती हो। **3.** देवबंदियो तुम्हारा अक़ीदा है कि कौआ खाना सवाब है पर हम सुन्नियों का सवाल है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने, सहाबा ने, ताबईन ने और तबऐ ताबईन ने कौआ नहीं खाया और ना ही इसे खाना जाइज़ समझा। लेकिन ये हराम कौआ खाना तुम जाइज समझते हो इसलिए देवबंदियों तुम तो बहुत बड़े बिद्अ़ती हो। **4.** देवबंदियो तुम्हारा अक़ीदा है कि शैतान का इल्म रसूलुल्लाह के इल्म से ज़्यादा है, हुज़ूर का इल्म बच्चों, पागलों और जानवरों की तरह है हुज़ूर के बाद दूसरा नबी पैदा हो सकता है और अल्लाह झूठ बोल सकता है (मआजअ़ल्लाह) लेकिन हम सुन्नियों का ये सवाल है कि कुरआन और हदीस में ऐसा कहाँ लिखा है? सहाबा, ताबईन और तबैं ताबईन ने ऐसा कहाँ लिखा या इसे जाइज़ समझा लेकिन देवबंदियो तुम समझते हो इसलिए तुम ही बिद्अ़ती हो और काफ़िर भी 'बेशक जो शख़्स इनके कुफ़्री अक़ाइद को जानता हो फिर भी इन वहाबियों/देवबंदियों को काफ़िर ना माने तो वह भी काफ़िर है।

शिर्क बोलने की बीमारी– क़ब्र पर जाना सुन्नत है। लेकिन जब किसी को वहाबियत/देवबंदियत की बीमारी लगती है तो वह इस सुन्नत को शिर्क, शिर्क, शिर्क कहने लगता है और औलिया अल्लाह को ख़ूब गाली देता है। वहाबियों/देवबंदियों ने इस प्यारी सुन्नत को शिर्क का नाम देकर ख़ूब अपनी जनसंख्या (तादाद) बढ़ाई।

शिर्क किसे कहते हैं? अल्लाह के सिवा किसी और को खुदा जानना या इबादत के लाइक़ समझना शिर्क है।

मज़ारों पर हाज़री– शिर्क का मतलब जानने के बाद यह सवाल

उठता है कि नबी या अल्लाह के वली की मज़ार शरीफ़ पर जाना कैसा है? मज़ारों पर हाज़री के ताल्लुक से कुछ सवाल जिसे वहाबी/देवबंदी हमेशा पूछते हैं, जिसका जवाब नहीं मिल पाने की वजह से आम सुन्नी मुसलमान परेशान हो जाते हैं और इन शैतानों के बिछाए हुए जाल में फँस जाते हैं। उन्हीं सवालों के जवाब यहाँ पेश किये जा रहे हैं।

सवाल– क्या अल्लाह के नबी और रसूल अपनी क़ब्रों में ज़िंदा हैं?

जवाब– जी हाँ ज़िंदा हैं। **हदीस–** हज़रत अबू दरदा रज़िअल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि खुदा ए तआला ने ज़मीन पर अम्बिया (नबी और रसूल) अलैहिमुस्सलाम के जिस्मों को खाना हराम फ़रमा दिया है। अल्लाह तआला के नबी ज़िंदा हैं, रिज़्क़ दिये जाते हैं। **(हवाला– मिश्कात शरीफ़, पेज नं. 121)**

सवाल– क्या खुद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़ब्रों पर तशरीफ़ ले जाते थे?

जवाब– हदीस– इब्ने अबी शैबा से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हर साल के शुरू में शोहदाए ओहद की क़ब्रों पर तशरीफ़ ले जाते थे। **(हवाला– शामी शरीफ़, जिल्द 1, पेज नं. 604)**

सवाल– क्या सहाबा–ए–कराम भी क़ब्रों पर जाते थे और क्या उन्हें फ़ायदा मिलता था?

जवाब– जी हाँ जाते थे। **हदीस–** हज़रत ए अबू जौज़ा रज़िअल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि मदीना मुनव्वरा में सख़्त सूखा पड़ गया। लोगों ने हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़िअल्लाहु अन्हा से शिकायत की। आप ने फ़रमाया कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की मज़ारे अक़दस पर हाज़िर हो। छत में एक सूराख़ (ऊपर) बनाओ ताकि क़ब्रे मुबारक और आसमान के दरम्यान पर्दा ना रहे। लोगों ने ऐसा ही किया तो इस ज़ोर की बारिश हुई कि ख़ूब सब्ज़ा उगा और ऊँट उसे चर कर ख़ूब मोटे हो गए यहाँ तक कि उनकी चर्बी फट पड़ती थी। तो उस साल को खुशहाली का साल कहा जाने लगा। **(हवाला– मिश्कात शरीफ़, पेज नं 545)**

सवाल– क्या हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अलावा भी किसी दूसरे अल्लाह के वली की क़ब्र पर जाना जाइज़ है? क्या ताबईन या तबा ताबईन भी क़ब्र पर जाते थे? क्या उनको भी फायदा हासिल होता था?

जवाब– इमाम शाफ़ई रज़िअल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं "मैं इमाम अबू हनीफ़ा रज़िअल्लाहु अन्हो से बरकत हासिल करता हूँ और उनकी क़ब्र के पास आता हूँ जब मुझे कोई हाजत दर पेश होती है, तो मै दो रकात नमाज़

पढ़ता हूँ उनकी क़ब्र के पास अल्लाह तआला से दुआ करता हूँ तो हाजत जल्द पूरी हो जाती है"। **(हवाला– रद्दुल मुहतार, जिल्द 1, पेज नं. 604)**

सवाल–क्या अल्लाह के वलियों के पास ताक़त और अख़्तियार है?

जवाब– हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह तआला का फ़रमान है कि जिसने मेरे किसी वली से दुश्मनी रखी मैं उससे एलाने जंग करता हूँ। मेरा बन्दा नफ़िल पढ़कर मेरा कुर्ब (नज़्दीकी) हासिल करता रहता है। यहाँ तक कि मैं उसे अपना महबूब बना लेता हूँ तो मैं उसके कान हो जाता हूँ जिससे वह सुनता है। मैं उसकी आँख बन जाता हूँ जिससे वह देखता है। मैं उसका हाथ हो जाता हूँ जिससे वह पकड़ता है। अगर वह मुझसे सवाल करता है तो मैं उसे ज़रूर देता हूँ। अगर वह मुझसे पनाह चाहता है तो मैं उसे ज़रूर पनाह देता हूँ। **(हवाला– बुख़ारी शरीफ़, जिल्द 2, पेज नं. 963 और मिश्कात शरीफ़, जिल्द 1, पेज नं. 197)**

इस हदीस से मालूम हुआ कि अल्लाह के वलियों का सुनना देखना, बोलना सिर्फ उन्हीं का नही बल्कि अल्लाह का सुनना, देखना, पकड़ना, बोलना हुआ करता है।

सवाल– क्या अल्लाह के वली दूसरों की मदद कर सकते हैं?

जवाब– मुल्ला अली क़ारी अपनी किताब "अब्दुल क़ादिर" के पेज 61 में **हुज़ूर ग़ौसे आज़म रज़िअल्लाहु तआला अन्हों** का यह क़ौल नक़ल फ़रमाया "यानी जो कोई रंज़ो गम में मुझसे मदद माँगे तो उसका रंजो गम दूर होगा और जो सख़्ती के वक़्त मेरा नाम लेकर मुझे पुकारे तो वह शिद्दत दफ़ा होगी और जो किसी हाजत में रब की तरफ़ मुझे वसीला बनाए तो उसकी हाजत पूरी होगी"।

ऐ सुन्नी मुसलमान भाइयो, अब हम आपके सामने ऐसी इबारत पेश करेंगे कि आप दंग रह जाएंगे कि जिस काम को देवबंदी कुफ़्र और शिर्क कहते हैं वही काम देवबंद पहुँचते–पहुँचते जाइज़ हो जाता है। देवबंदियों की मक्कारी समझने के लिए आप इस इबारत को कम से कम चार या पाँच बार पढ़ें तब आपको पता चलेगा कि ये कितने बड़े धोखेबाज़ हैं। आप देखेंगे कि कैसे देवबंदी मुल्ला मरने के बाद भी करामत दिखा रहा है।

सुबूत– *हिकायत 366–* मौलवी मोईनुद्दीन साहब हज़रत मौलाना मोहम्मद याकूब साहब के सबसे बड़े साहबज़ादे थे वो हज़रत मौलाना की एक करामत (जो बादे वफ़ात वाक़ेअ हुई) बयान फ़रमाते थे कि एक मरतबा हमारे नानौत में जाड़ा बुखार की बहुत कसरत हुई सो जो शख़्स मौलाना की क़ब्र से

मिट्टी ले जाकर बाँध लेता उसे ही आराम हो जाता। बस इस कसरत से मिट्टी ले गये कि जब भी क़ब्र पर मिट्टी डलवाऊँ तब ही ख़त्म। कई मरतबा डाल चुका परेशान होकर एक दफ़ा मौलाना की क़ब्र पर जाकर कहा "आप की तो करामत हो गई और हमारी मुसीबत हो गई याद रखो कि अगर अब के कोई अच्छा हुआ तो हम मिट्टी ना डालेगें ऐसे ही पड़े रहियो, लोग जूते पहने तुम्हारे ऊपर ऐसे ही चलेगें"। बस उसी दिन से फिर किसी को आराम ना हुआ। जैसी शोहरत आराम की हुई थी वैसे ही ये शोहरत हो गई कि अब आराम नही होता। फिर लोगों ने मिट्टी ले जाना बन्द कर दिया।

(हवाला– अरवाहे सलासा, पेज नं. 302)

मुसलमान भाइयो! ध्यान दीजिए कि देवबंदियों का मुल्ला क़ब्र में जिंदा है। देवबंदियों का मुल्ला मरने के बाद भी क़ब्र के अन्दर से लोगों की बातें सुनता है। देवबंदियों का मुल्ला मरने के बाद भी लोगों की बीमारी दूर करता है। देवबंदियों का मुल्ला मरने के बाद भी अख़्तियार रखता है। देवबंदियों का मुल्ला मरने के बाद भी करामत दिखा रहा है।

अब सभी पढ़ने वालों से गुज़ारिश है कि अगर यही अक़ीदा हम सुन्नी मुसलमान किसी नबी और वली के बारे में मानें जो कुरआन और हदीस से साबित है तो ये शिर्क कैसे हो जाएगा?

वहाबियों में शर्म का कुछ भी असर नहीं
है ऐतराज़ गैरों पे अपनी खबर नहीं।

ताज़ीम से चिढ़ने की बीमारी– आज वहाबियों/देवबंदियों को ताज़ीम का नाम सुनकर ही बुख़ार चढ़ जाता है। बेचारे कहीं भी लोगों को मीलाद, ज़िक्र, मनक़बत, सलाम पढ़ते हुए देखते है तो उन लोगों पर शिर्क और बिद्अ़त की मशीनगन चलाने लगते हैं।

क्या नबी की ताज़ीम ज़रूरी है?– जी हाँ, अल्लाह तआ़ला कुरआन में फ़रमाता है (तर्जमा)– ऐ नबी बेशक हमने तुम्हे भेजा हाज़िर व नाज़िर और खुशी और डर सुनाता ताकि ऐ लोगों तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ और रसूल की ताज़ीम व तौक़ीर करो और सुबह व शाम अल्लाह की पाकी बोलो। **(सूरह अल फ़तह, पारा 26, आयत 8,9)**

ऐ कुरआन के मानने वालो, अपने रब के इस हुक्म को ध्यान से पढ़ो। अल्लाह ने सबसे पहले ईमान के बारे में फ़रमाया, फिर नबी की ताज़ीम के बारे में फ़रमाया उसके बाद अपनी इबादत को फ़रमाया। भाइयो, मुसलमान बनने के लिए ज़रूरी है कि दिल में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मोहब्बत और

ताज़ीम का अक़ीदा हो। जैसे कि हदीस में है– "तुम में से कोई मुसलमान न होगा जब तक मैं उसे उसके माँ–बाप, औलाद और सब आदमियों से ज़्यादा प्यारा न होऊँ"। **(हवाला– बुखारी शरीफ, जिल्द 1, पेज न0 7)**

ऐ कुरआन और हदीस के मानने वालो! अल्लाह ने हमें नबी की ताज़ीम का हुक्म दिया है। नबी की ताज़ीम करना कुफ़्र नही बल्कि नबी की ताज़ीम का इनकार करना कुफ़्र है। मुसलमानो आपको याद होना चाहिए कि इन्सान के पैदा होने के बाद सबसे पहला कुफ़्र नबी की ताज़ीम का इनकार करना है। शैतान इबलीस पहले काफ़िर नही था बल्कि नबी हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की ताज़ीम का इनकार करने की वजह से काफ़िर हो गया इसलिए मुसलमान भाइयो आप इन इबलीस वहाबियों/देवबंदियों के झाँसे में बिल्कुल मत पड़िये।

इस मसले को और अच्छी तरह समझने के लिए ज़रूर पढ़ें हमारी किताब **"सुन्नी और वहाबी में फ़र्क़"**।

वसीले से चिढ़ने की बीमारी– वहाबियों/देवबंदियों ने दीने इस्लाम से जुड़े हर अच्छे काम में अपनी टाँग अड़ाई जिसमें वसीला भी एक मुद्दा है। आप अक्सर सुनते होंगे कि सीधे या डायरेक्ट अल्लाह से माँगो किसी को वसीला मत बनाओ वरना शिर्क हो जाएगा। अब सवाल यह उठता है कि क्या वसीले से दुआ माँगना जाइज़ है? आइए देखें कि कुरआन और हदीस में वसीले का क्या हुक्म है।

पहला सुबूत कुरआन से (तर्जमा)– ऐ ईमान वालों अल्लाह से डरो और उस की तरफ वसीला ढूँढ़ो। **(पारा 6, सूरह माएदह, आयत 35)**

दूसरा सुबूत– खुद हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक सहाबी को इस तरह दुआ करने का तरीक़ा तालीम फ़रमाया "ऐ अल्लाह मै तेरे नबी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वसीले से तुझ से हाजत रवाई चाहता हूँ और तेरी तरफ़ मोतवज्जह होता हूँ"।

(हवाला– तिर्मीज़ी शरीफ़, जिल्द 2, पेज नं. 198)

तीसरा सुबूत– यही हदीस मिश्कात शरीफ़, जिल्द 1,पेज 219 पर है।

चौथा सुबूत– सुन्नी मुसलमान भाइयो आपको मालूम होना चाहिए कि जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से एक लग़ज़िश हो जाने पर अल्लाह तआला ने उन्हे दुनिया में भेज दिया तो आदम अलैहिस्सलाम तीन सौ साल तक रोते रहे और अल्लाह से माफ़ी की दुआ माँगते रहे लेकिन अल्लाह ने उनकी तौबा कुबूल नही की लेकिन जब हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने अल्लाह तआला से इस तरह दुआ माँगी कि "ऐ मेरे परवरदिगार! मैं तुझसे मुहम्मद सल्लल्लाह

अलैहि वसल्लम के वसीला से सवाल करता हूँ कि तू मुझे माफ़ फ़रमा दे"। तब अल्लाह तआ़ला ने उनको माफ़ किया। **(हवाला–बैहिकी और तबरानी)**

मुसलमानो! ग़ौर करो कि आदम अलैहिस्सलाम से तो सिर्फ एक लग़ज़िश हुई थी पर आज हम सब ने ढेरों गुनाह जाने अंजाने कर डाले कि गिन नहीं सकते। तो किस मुँह से डायरेक्ट अल्लाह से माँगें इसलिए दुआ माँगते वक़्त ज़रूर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और दूसरे औलिया ए कराम का वसीला देकर अल्लाह से दुआ माँगिये। इंशाअल्लाह दुआ ज़रूर कुबूल होगी और जिसने वसीले का इनकार किया गोया उसने कुरआन और हदीस शरीफ़ का साफ–साफ इनकार कर दिया।

फ़ातेहा से चिढ़ने की बीमारी– जो लोग दुनिया से गुज़र चुके हैं उनको नफ़ली सवाब पहुँचाना कुरआन और हदीस से साबित है। इसे ईसाले सवाब कहा जाता है। यह ईसाले सवाब जब किसी आम आदमी के लिए होता है तो इसे फ़ातेहा कहा जाता है और जब किसी बुज़ुर्ग के लिए किया जाता है तो इसे नियाज़ कहा जाता है लेकिन ख़बीस वहाबियों, देवबंदियों को इसमे शिर्क और बिद्अत नज़र आता है।

ईसाले सवाब (फ़ातेहा) में क्या करते हैं?–फ़ातेहा में दुरूद शरीफ़, कुरआन की आयात पढ़कर (और अगर खाना या शीरीनी भी हो तो) इन सब का सवाब जो लोग दुनिया से गुज़र चुके हैं उनको पहुँचाते हैं। अब सवाल यह उठता है कि क्या ज़िन्दों की दुआ से मुर्दों को कुछ फ़ायदा पहुँचता है या नहीं। आइए देखें कि कुरआन व हदीस में ईसाले सवाब का क्या हुक्म है–

पहला सुबूत कुरआन से (तर्जमा)– वह जो उनके बाद आए वह यूँ दुआ करते हैं! ऐ हमारे परवरदिगार हम को बख़्श दे और हमारे उन भाइयों को भी बख़्श दे जो हमसे पहले बाईमान गुज़र चुके हैं। **(पारा 28, सूरह हश्र, आयत 10)**

दूसरा सुबूत हदीस से– हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास रज़िअल्लाहु तआला अन्हो फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया– मुर्दों की हालत क़ब्र में डूबते हुए फ़रियाद करने वाले की तरह होतीहै वह इन्तेज़ार करता है कि उस के बाप या माँ या भाई या दोस्त की तरफ से उस को दुआ पहुँचे और जब उसको किसी की दुआ पहुँचती है तो वह दुआ का पहुँचना उसको दुनिया व माफ़ीहा से महबूब तर होता है और बेशक अल्लाह तआला अहले ज़मीन की दुआ से अहले कुबूर को पहाड़ों की मिस्ल अज्रो रहमत अता करता है और बेशक जिंदों का तोहफ़ा मुर्दों की तरफ़ यही है कि उन के लिए बख़्शिश की दुआ माँगी जाए। **(हवाला–मिश्कात शरीफ़, पेज 206)**

तीसरा सुबूत हदीस से– हज़रत सअद बिन उबादह रज़िअल्लाहु अन्हो ने हाज़िर होकर अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरी माँ का इन्तेक़ाल हो गया है, तो कौन सा सदक़ा अफ़ज़ल (बेहतर) है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया पानी अफ़ज़ल है, तो उन्होंने एक कुँआ खुदवाया और फ़रमाया यह कुँआ मेरी माँ के लिए है।

(हवाला– मिश्कात शरीफ़, पेज नं. 169)

नोट– **1–** क़ुरआन और हदीस से मालूम हुआ कि हर मुसलमान अपने से पहले के मुसलमान के लिए दुआए बख़शिश करेगा तो इसका सवाब उन्हे पहुँचेगा।

2– सहाबिये रसूल ने कुआँ खोदने का सवाब अपनी माँ को बख़्शा इस तरह मय्यत को किसी अच्छे काम का सवाब बख़्शाना बेहतर है।

3– सवाब बख़्शने के अल्फ़ाज़ जुबान से कहना सहाबी की सुन्नत है कि कुँआ खोदने के बाद सहाबी ने फ़रमाया "यह कुँआ सअ़द की माँ के लिए है"। इसी तरह आप अपने उस अज़ीज़ रिश्तेदार का नाम लें या जिस बुज़ुर्ग को सवाब पहुँचाना चाहते हैं उसका नाम लें जैसे– यह खाना इमाम हुसैन या शोहदाए करबला या सहाबा या ग़ौस पाक या ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ रिज़वानुल्लाही तआ़ला अलैहिम अजमईन के लिए है।

वहाबियों/देवबंदियों का ये ऐतराज़ कि जिस खाने पर फातेहा हो रही है उसे अभी किसी ने खाया नहीं तो फिर सवाब किस चीज़ का पहुँच रहा है तो इसका जवाब यह है कि सहाबिये रसूल ने कुँआ के पानी के इस्तेमाल होने से पहले सवाब बख़्श दिया हालाँकि लोगों ने अभी पानी इस्तेमाल नही किया था।

वहाबियों/देवबंदियों का ये ऐतराज़ कि खाना या शीरनी वग़ैरह सामने रखकर फ़ातेहा पढ़ना बिद्अत और हराम है तो इसका जवाब यह है कि सअ़द रज़िअल्लाहु तआला अन्हो ने कुँआ के सामने खड़े हो कर फ़रमाया कि यह मेरी माँ के लिए है लिहाज़ा खाना या शीरनी सामने रख कर यह कहना कि इसका सवाब फलाँ को पहुँचे जाइज़ और सहाबी की सुन्नत है।

खाना सामने रखकर बिस्मिल्लाह पढ़ कर तब खाना शुरू करते हैं। बिस्मिल्लाह भी कुरआन की आयत है। अगर खाना सामने रखकर कुरआन पढ़ना मना है तब तो देवबंदियो तुम्हारे कानून के हिसाब से खाना सामने रखकर बिस्मिल्लाह पढ़ना भी मना होना चाहिए। **(मआज़ल्लाह)**

अनवारे सातेआ पेज नं. 145 और हाशिया ख़ज़ानतुर्रिवायात में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अमीर हम्ज़ा रज़िअल्लाहु अन्हो के लिए तीसरे और सातवें और चालीसवें दिन और छठे माह और साल भर बाद सदक़ा किया। यह तीजा, शशमाही और बरसी की असल है।

<u>सलाम से चिढ़ने की बीमारी</u>– नमाज़, ज़िक्र और मीलाद शरीफ़ के बाद सलात व सलाम पढ़ना जाइज़ है। लेकिन नबी के ग़द्दार वहाबियों/देवबंदियों/तबलीगियों को सलात व सलाम पढ़ने से सख़्त नफ़रत है इसलिए शिर्क और बिद्अत चिल्लाने लगते हैं। आख़िर सच्चाई क्या है?

सलाम क्यों पढ़ते हैं– क्योंकि अल्लाह तआला ने हम मुसलमानों को पढ़ने का हुक्म दिया है। **कुरआन (तर्जमा)**– "बेशक अल्लाह और उसके फरिश्ते दुरूद भेजते हैं उस गै़ब बताने वाले (नबी) पर ऐ ईमान वालों उन पर दुरूद और खूब सलाम भेजो"। **(पारा 22, सूरह एहज़ाब, आयत 56)**

मुसलमान भाईयो! कुरआन की इस आयत में जिस तरह दुरूद शरीफ़ पढ़ने का हुक्म है उससे भी ज़्यादा सलाम पढ़ने का हुक्म है और सलाम पढ़ने पर बहुत ज़्यादा ज़ोर दिया जा रहा है। खुद अल्लाह और उसके फ़रिश्ते हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दुरूद और सलाम भेजते हैं और अल्लाह तआला हम मुसलमानो को भी दुरूद और सलाम पढ़ने का हुक्म दे रहा है।

ऐ मुसलमान भाइयो, अल्लाह के इस हुक्म पर अमल हर ईमान वाला करता है। कोई कम, कोई ज़्यादा, कोई बहुत ज़्यादा। हर अल्लाह वाले ने अपनी–अपनी ज़बानों में सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर सलाम भेजा। **हदीस**– हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊद रज़िअल्लाहु अन्हो ने नमाज़ से फ़ारिग़ होकर दुरूद और सलाम पढ़ा तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया "दुआ कर कुबूल की जाएगी, दुआ कर कुबूल की जाएगी"। **(हवाला– मिश्कात शरिफ, पेज नं. 87)**

देवबंदियों के यहाँ से सुबूत– देवबंदियों के पीर हाजी इम्दादुल्लाह मुजाहिर मक्की लिखते हैं "मशरब फ़क़ीर का यह है कि महफ़िले मीलाद शरीफ़ में शरीक होता हूँ बल्कि ज़रिया–ए–बरकत समझकर हर साल मुनअक़िद करता हूँ और क़याम में लुत्फ़ व लज़्ज़त पाता हूँ"।

(हवाला– फैसला हफ़्त मसला, पेज नं. 8)

अजीब बात है कि महफ़िले मीलाद शरीफ़ जिसमे खड़े होकर सलाम भी पढ़ा जाता है को पीर साहब बरकत का ज़रिया समझकर हर साल कराते हैं और लुत्फ़ भी पाते हैं लेकिन मुरीद देवबंदियों को इसमें शिर्क नज़र आता है। अब पता नहीं ये देवबंदी अपने पीर पर कौन सा फ़तवा लगाएँगे।

नोट–नये देवबंदियों ने नया जाहिलाना ऐतराज़ खोजा है कि नमाज़ के अत्तहियात में ही सलाम है इसलिए नमाज़ के अलावा सलाम नही पढ़ना चाहिए।

मुसलमानो ये देवबंदियों का सफेद झूठ है। ऐसे और भी जाहिलाना ऐतराज़

का जवाब कुरआन और हदीस से जानने के लिए ज़रूर पढ़िये मुफ़्ती खुशनूद आलम एहसानी सिद्दीक़ी साहब की किताब "सलातो सलाम का सुबूत"।

<u>इक़ामत में पहले खड़े होने की बीमारी</u>– आज वहाबियों/देवबंदियों के इस फ़ितने की वजह से मस्जिदों के अन्दर लड़ाई मची है कि जब इक़ामत कही जाती है तो कुछ लोग बैठे हैं तो कुछ लोग खड़े हैं। देवबंदियत के जाल में फँसे बेवकूफ देवबंदी बैठे हुए सुन्नियों को घूरते हैं और सुन्नी इन जाहिल देवबंदियों को घूरते हैं गोया कि एक रस्साकशी का माहौल बन जाता है। अख़िर सच्चाई क्या है?

इक़ामत में हय्यअललफलाह पर खड़े होने का सुबूत–

पहला सुबूत– जब इक़ामत कही जाए तो मत खड़े हो यहाँ तक कि मुझे देख लो। (हवाला– बुख़ारी शरीफ़, जिल्द 1 पेज नं. 88)

दूसरा सुबूत– यह हदीस मिश्कात शरीफ़ के जिल्द 1 पेज 67 पर है।

तीसरा सुबूत– यही हदीस मुस्लिम शरीफ़, जिल्द 1, पेज 220 पर है।

चौथा सुबूत– मुस्लिम शरीफ़ की इस हदीस की शरह में इमाम नूई अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं यानी इमामे आज़म (अबू हनीफ़ा) और उलमाए कौफ़ ने फ़रमाया कि जब हय्यअलस्सलाह कहे तब सब लोग खड़े हों।

(हवाला– नूई शरीफ, पेज नं. 221)

पाँचवा सुबूत– मुल्ला अली क़ारी लिखते हैं "कि हमारे अइम्मये कराम हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा, इमाम अबू यूसुफ़ और इमाम मुहम्मद रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने फ़रमाया कि इमाम और मुक़तदी हय्यअलस्सलाह के वक़्त खड़े हों। (हवाला– मिरकात शरह मिश्कात, जिल्द 1, पेज 419)

छठा सुबूत– मोअज़्ज़िन जिस वक़्त हय्यअललफ़लाह कहे तब इमाम और मुक़तदियों को खड़ा होना चाहिए।

(हवाला– फ़तावा आलमगीरी, जिल्द 1, पेज नं. 58)

सातवाँ सुबूत– उसके लिए खड़े होकर इन्तिज़ार करना मकरूह है। बल्कि बैठ जायें फिर जब मुअज़्ज़िन हय्यअललफ़लाह कहे तो उठें।

(हवाला– शामी शरीफ़, जिल्द 1, पेज नं. 268)

आठवाँ सुबूत– हज़रत इमाम मुहम्मद शैबानी रज़िअल्लाहु तआला अन्हो फरमाते हैं कि तकबीर कहने वाला जब हय्यअललफ़लाह पर पहुँचे तो मुक्तदियों को चाहिए कि नमाज़ के लिए खड़े हों और फिर सफबंदी करते हुए सफ़ें को सीधी करें।

(हवाला– मुवत्ता इमाम मुहम्मद बाबु तस्वियतिस्सफ, पेज नं. 88)

नौवाँ सुबूत– इमाम और मुक्तदी का हय्यअललफ़लाह के वक़्त खड़ा होना सुन्नते मुस्तहब्बा है। **(हवाला–दुर्रे मुख़्तार मए रद्दुलमुहतार जिल्द 1, पेज 322)**

दसवाँ सुबूत– इमाम और मुक्तदी हय्यअलस्सलाह कहने के वक़्त खड़े हों।
(हवाला– शरह बका, जिल्द 1, पेज नं. 136)

ग्यारहवाँ सुबूत– और खड़े होना उस वक़्त है जब हय्यअललफ़लाह कहा जाए। **(हवाला– नूरूल यजाह, पेज नं. 74)**

बारहवाँ सुबूत– शेख़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह अलैह लिखते हैं कि "फुक़हाये कराम ने फ़रमाया मज़हब यह है कि हय्यअलस्सलाह के वक़्त उठना चाहिए"। **(हवाला– अशिअतुल्लमआत, जिल्द 1, पेज नं. 321)**

नोट– कुछ किताबों में हय्यअलस्सलाह और कुछ में हय्यअललफ़लाह पर उठने का हुक्म है तो हय्यअलस्सलाह के आख़िर में उठे और हय्यअललफ़लाह के शुरू में सीधे खड़े हो जाए इस तरह दोनो क़ौल पर अमल हो जाएगा।
(हवाला– फ़तावा रज़विया, जिल्द 2, पेज नं. 472)

देवबंदियों के यहाँ से तेरहवाँ सुबूत– देवबंदी मुफ्ती अब्दुल रहीम लिखते हैं। "इकामत के वक्त कोई शख्स मस्जिद में आये तो खड़े–खड़े इकामत या इमाम का इन्तेज़ार करना मकरूह है, अगर ईमाम मेहराब के पास है तो हय्यअललफलाह के वक्त खड़े होना मुस्तहब (अच्छा) है"। **(हवाला– फतावा रहीमिया, जि0 4, पेज न0 288, नासिर मक्तबा रहीमिया)**

देवबंदियों के यहाँ से चौदहवां सुबूत– देवबंदियों के रहनुमा मौलवी करामत अली लिखते हैं "और जब इकामत में हय्यअलस्सलाह कहे तब इमाम और सब लोग खड़े हो जाऐं"।**(हवाला–मुफ्ताह अल जमात, पेज नं. 45)**

नबी को "हम जैसे बशर" बोलने की बीमारी– आज वहाबियों/देवबंदियों/तबलीगियों की वजह से ये बीमारी आम हो चुकी है कि जिसे बोलने का भी शऊर नहीं वो भी बोल देता है कि रसूलुल्लाह हमारी तरह बशर थे। ज़्यादा से ज़्यादा ऐसे हैं जैसे हमारे बड़े भैय्या। नबी को बस इतनी इज़्ज़त दो जैसे बड़े भाई को देते हो। या नबी को इस तरह समझो जैसे किसी गाँव का चौधरी। मुसलमानो, ये तो थी देवबंदियों, वहाबियों, तबलीगियों की नापाक ज़हनियत।

क्या है सुन्नी मुसलमानो का अक़ीदा नबी और रसूल के बारे में? नबी इन्सान ही होते हैं। मर्द (Male) को नबी बनाया जाता है। जिन्न, फ़रिश्ते, औरत में से कोई नबी नही बन सकता। अल्लाह ने नबी को इन्सानों के बीच इन्सानी शक्ल सूरत में ही भेजा है। लेकिन नबी का दर्जा आम इन्सानों से बहुत ऊँचा है इसलिए नबी को आम बोल चाल में बड़े भाई या हम जैसा बशर

या गाँव का चौधरी कहना शैतान इबलीस का तरीक़ा है। इसी तरह यह कहना कि "हममे और पैग़म्बर में क्या फ़र्क़ है, हम भी बशर वो भी बशर बल्कि हम तो ज़िन्दा हैं लेकिन वो तो मर कर मिट्टी में मिल गए" ।**(माअज़ल्लाह)** जैसे अल्फ़ाज़ बोलना नबी की शान में खुली गुस्ताख़ी है।

सवाल– नबी को "हम जैसे बशर" हमेशा क्यों बोलते हैं ये देवबंदी और तबलीग़ी जमाअ़त वाले?

जवाब– देवबंदी अपनी इस बात को साबित करने के लिए कुरआन की इस आयत का हवाला देते हैं **"क़ुल इन्नमा अना बशरूम मिस्लुकुम"** (तर्जमा– ऐ महबूब फ़रमा दो कि मै तुम जैसा बशर हूँ।) फिर ये कहेगें देखो आयत से मालूम पड़ा कि नबी भी हमारे जैसे बशर हैं।

मुसलमानो, जानलो, कि देवबंदियों/तबलीगियों की ज़ात एक चालाक लोमड़ी की तरह होती है। इन्होंने आपको आयत तो बता दिया पर इससे जुड़ी तीन बातों को नहीं बताया। आइए देखें कि वो तीन बातें कौन सी हैं।

पहली बात– ये आयत आधी है। "मिस्लुकुम" के बाद "यूहा इलैया" की क़ैद लगी है जिसकी तफ़सीर ये देवबंदी नहीं बताते हैं।

दूसरी बात– ये आयत काफ़िरों के लिए है ना कि मुसलमानों के लिए क्योंकि नबी करीम सलल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने के काफ़िर, हुजूर को जादूगर समझते थे और डरते थे इसलिए अल्लाह ने हुजूर को इजाज़त दी कि जब आप काफ़िरों से बात करें तो इस तरह कह सकते हैं कि ऐ लोगों तुम मुझसे घबराओ नही मैं भी तुम्हारी तरह हूँ यानी बशर हूँ।

तीसरी बात– इस आयत में अल्लाह फ़रमाता है "ऐ महबूब तुम फ़रमा दो" इस जुमले (वाक्य) में अल्लाह तआला सिर्फ हुजूर को इजाज़त दे रहा है कि आप खुद अपने बारे में ऐसा कह सकते हैं। इस आयत में अल्लाह ने यह नही फ़रमाया कि "ऐ लोगो तुम भी ऐसा कहा करो"।

सुन्नी मुसलमान भाइयों, अल्लाह तआ़ला ने पूरी कुरआन में अपने महबूब को अच्छे नामों से पुकारा है जैसे– या अय्युहन्नबीयु, या अय्युहर्रसूलु, या अय्युहल मुदस्सिर कहा लेकिन हुजूर का नाम जैसे "या मोहम्मद" लेकर नही पुकारा तो फिर हम गुनहगार लोग ये बोल भी कैसे सकते हैं कि हुजूर जैसे बड़े भैय्या या गाँव के चौधरी।

ऐ मुसलमानो, आप जानते हैं कि अगर कोई अपनी माँ को कहे कि यह मेरे बाप की बीवी है। ऐसा कहना यक़ीनन गुस्ताख़ी कहलाएगी हालाँकि अक़लन उसने सही कहा है।

अल्लाह कुरआन में फ़रमाता है "रसूल के पुकारने को आपस में ऐसा

न ठहराओ जैसा कि तुम एक दूसरे को पुकारते हो। और उनके हुजूर बात चिल्ला कर न कहो जैसे एक दूसरे के सामने चिल्लाते हो, कि कहीं तुम्हारे आमाल बर्बाद न हो जायें और तुमको खबर भी न हो।" **(पारा-26, सूरत हुजुरात, आयत-2)**

अब मुसलमान भाइयो आप खुद ही फैसला करें कि आप अल्लाह की बात मानेगें या इन मुर्तद देवबंदियों/तबलीगी जमाअत वालों की बात मानेगें।

<u>कुरआन का ग़लत तर्जमा किया देवबंदियों ने</u>– एक ज़ुबान से दूसरी ज़ुबान में तर्जमा करना मामूली काम है लेकिन किसी ज़ुबान की फ़साहत व बलाग़त, सलासत व मानवीयत, मुहावरे, अंदाज़े ख़िताब और शब्दों के अर्थ में हुए बदलावों को समझना फिर तर्जमा करना उतना ही मुश्किल काम है। आइए इसे एक छोटे से उदाहरण से समझें– फारसी भाषा में किसी आदमी को "मेहतर" कहना उसकी इज़्ज़त बढ़ाना है क्योंकि फारसी भाषा में इसका अर्थ है "सरदार" लेकिन यही इज़्ज़त वाला शब्द हमारे यहाँ गाली है।

लेकिन आज देवबंद के मौलानाओं ने कुरआन का जो तर्जमा किया उसमें ढेरों गलतियाँ हैं कि जिससे अर्थ का अनर्थ हो गया। देवबंदियों के तर्जमे अल्लाह और उसके रसूल की तौहीन से भरे पड़ें हैं। देवबंदियों ने ऐसे तर्जमे किये कि जिसकी वजह से हराम चीज़ हलाल हो गई और हलाल चीज़ हराम हो गई। देवबंदियों ने कुछ तर्जमों में ऐसी गलतियाँ भी कर दीं कि अगर उस पर यक़ीन कर लिया जाए तो आदमी काफ़िर मुर्तद हो जाए। इस क़िस्म का तर्जमा करके वो खुद गुमराह होते हैं और दूसरों को भी गुमराह करते हैं।

फिर जब हम आलाहज़रत इमाम अहमद रज़ा का तर्जमा **"कंज़ुल ईमान"** देखते हैं तो एक भी ग़लती नही पाते। नीचे देवबंदियों और आला हज़रत के कुछ तर्जमों को एक साथ पेश किया जा रहा है। क़ारेईन आप खुद इंसाफ़ करें कि कौन सही है।

❖ <u>पारा-4, सूरह अल-इमरान, आयत-142</u>

✗ **तर्जमा**– हालांकि अभी खुदा ने तुम में से जिहाद करने वालों को तो अच्छी तरह मालूम किया ही नहीं। **(फ़तेह मुहम्मद जालन्धरी देवबंदी)**

✗ **तर्जमा**– हालांकि अभी अल्लाह ने उन लोगों को तुम में से जाना ही नहीं जिन्होंने जिहाद किया। **(अब्दुल माजिद दरियाबादी देवबंदी)**

✗ **तर्जमा**– हालांकि अल्लाह तआला ने उन लोगों को तो देखा ही नहीं जिन्होंने तुम में से जिहाद किया हो। **(अशरफ़ अली थानवी देवबंदी)**

✓ **तर्जमा**– और अभी अल्लाह ने तुम्हारे ग़ाज़ियों का इम्तिहान न लिया। **(आला हज़रत)**

नोट– अल्लाह तआला जो आलिमुल ग़ैब है। लेकिन देवबंदियों के इस तर्जमे पर यक़ीन करें तो अल्लाह को मालूम ही नहीं कि मोमिनों में से कौन लोग जिहाद करेंगे। (माअज़ल्लाह)

❖ पारा–26, सूरह अल–फ़तह, आयत–1

✖ तर्जमा– बेशक हमने आप को एक खुल्लम खुल्ला फ़तह दी ताकि अल्लाह आपकी सब अगली पिछली ख़ताऐं माफ़ कर दे।

(अब्दुल माजिद दरियाबादी देवबंदी)

✖ तर्जमा– हमने तुम्हारी खुल्लम खुल्ला फ़तह करा दी ताकि तुम इस फ़तह के शुक्रिया में दीने हक़ कि तरक्क़ी के लिए और ज़्यादा कोशिश करो और खुदा उसके सिला में तुम्हारे अगले और पिछले गुनाह माफ़ कर दे।

(डिप्टी नज़ीर अहमद देवबंदी)

✓ तर्जमा– बेशक हमने तुम्हारे लिए रौशन फ़तह दी ताकि अल्लाह तुम्हारे सबब से गुनाह बख़्शे, तुम्हारे अगलों के और तुम्हारे पिछलों के।

(आला हज़रत)

नोट– ऐ मुसलमानो बताओ कि हुज़ूर मासूमों के सरदार या गुनहगार? आपको यह तो मालूम ही होगा कि नबी और फ़रिश्ते मासूम होते हैं उनसे गुनाह हो ही नहीं सकता, मगर इन जाहिल देवबंदियों के तर्जमों के हिसाब से नबी गुनहगार और गुमराह हैं। अब ज़रा आलाहज़रत का तर्जमा देखिए कि अल्लाह अपने महबूब के सदक़े तुफ़ैल में हम गुनहगार मुसलमानो को बख़्श देगा।

❖ पारा–9, सूरह इंफ़ाल, आयत–30

✖ तर्जमा– और वह भी दाँव करते थे और अल्लाह भी दाँव करता था और अल्लाह का दाँव सबसे बेहतर है। **(महमूदुल हसन देवबंदी)**

✖ तर्जमा– और मकर करते थे वह और मकर करता था अल्लाह तआला और अल्लाह तआला नेक मकर करने वालों का है। **(शाह रफ़ी उद्दीन)**

✖ तर्जमा– और वह तो अपनी तदबीर कर रहे थे और अल्लाह मियाँ अपनी तदबीर कर रहे थे और सबसे ज़्यादा मुस्तहकम तदबीर वाला अल्लाह है। **(अशरफ़ अली थानवी देवबंदी)**

✓ तर्जमा– और वह अपना सा मकर करते थे और अल्लाह अपनी खुफ़िया तदबीर फ़रमाता था और अल्लाह की खुफ़िया तदबीर सबसे बेहतर।

(आलाहज़रत)

नोट– अल्लाह तआला को मक्र (मक्कार) और फ़रेब (धोखा) की तरफ निस्बत करना उसकी शान में खुली गुस्ताख़ी है। ये एक बुनियादी ग़लती है और

अशरफ़ अली थानवी ने अल्लाह पाक लिखने के बजाय अल्लाह मियाँ लिख डाला जो कि ग़लत है, क्योंकि मियाँ के तीन मआने हैं मालिक, शौहर और ज़िना का दलाल और थानवी ने मियाँ कहकर अल्लाह को आम इन्सानों के बराबर ला खड़ा किया। जबकि आला हज़रत ने मज़्कूरा आयत में "मकर" का तर्जमा तफ़ासीर की रौशनी में किया है खुफिया तदबीर और लफ्ज़ "मकर" को पहले मक़ाम पर तर्जमा में काफ़िरों की तरफ मन्सूब कर दिया।

❖ <u>पारा–5, सूरह निसा, आयत–142</u>

× **तर्जमा–** खुदा उन्ही को धोखा दे रहा है।

(डिप्टी नज़ीर अहमद देवबंदी)

× **तर्जमा–** अल्लाह उन्हीं को धोखे में डालने वाला है।

(फ़तेह मोहम्मद जालंधरी देवबंदी)

× **तर्जमा–** मुनाफ़ेक़ीन दग़ा बाज़ी करते हैं अल्लाह से और अल्लाह भी उनको दगा देगा। **(आशिक़ इलाही मेरठी और महमूदुल हसन देवबंदी)**

✓ **तर्जमा–** बेशक मुनाफ़िक़ लोग अपने गुमान में अल्लाह को फ़रेब देना चाहते हैं और वही उनको ग़ाफ़िल करके मारेगा। **(आलाहज़रत)**

❖ <u>पारा–11, सूरह यूनुस, आयत–21</u>

× **तर्जमा–** कह दो अल्लाह सबसे जल्द बना सकता है हीला।

(फ़तेह मोहम्मद जालंधरी देवबंदी और आशिक़ इलाही देवबंदी)

× **तर्जमा–** अल्लाह चालों में उनसे भी बढ़ा हुआ है।

(अब्दुल माजिद दरियाबादी देवबंदी)

✓ **तर्जमा–** तुम फ़रमा दो अल्लाह की खुफ़िया तदबीर सबसे जल्द हो जाती है। **(आलाहज़रत)**

नोट– अल्लाह तआला के लिए दग़ाबाज़ी, धोखेबाज़ी, फ़रेबी, चाल चलने वाला, चालों में तेज़, हीला बनाने वाला जैसे अल्फ़ाज़ किसी भी तरह अल्लाह की शान के लायक़ नही ऐसा कहना कुफ़्र है।

❖ <u>पारा–8, सूरह आराफ़, आयत–54</u>

× **तर्जमा–** फिर अल्लाह अर्श पर जा बिराजा।

(डिप्टी नज़ीर अहमद देवबंदी)

× **तर्जमा–** फिर तख़्त पर चढ़ा। **(नवाब वहीदुज़्ज़माँ, गैर मुक़ल्लिद)**

× **तर्जमा–** फिर क़ायम हुआ तख़्त पर। **(आशिक़ इलाही देवबंदी)**

✓ **तर्जमा–** फिर अर्श पर इस्तवा फ़रमाया जैसी उसकी शान के लायक़ है। **(आलाहज़रत)**

❖ पारा–1, सूरह बकरा, आयत–115

× तर्जमा– इधर अल्लाह ही का रूख़ है।

(अशरफ़ अली थानवी और आशिक़ इलाही देवबंदी)

× तर्जमा– उधर अल्लाह का सामना है।(डिप्टी नज़ीर अहमद देवबंदी)

✓ तर्जमा– तो तुम जिधर मुँह करो वज्हुल्लाह है। (आलाहज़रत)

नोट– देवबंदियों ने अल्लाह के लिए उठना, बैठना, चढ़ना, रूख़ करना, सामना होना जैसे लफ़्ज़ लिखकर अल्लाह के लिए जिस्म साबित कर डाला जो कुफ़्र है। जबकि अल्लाह जिस्म और जिस्मानियत से पाक है।

❖ "या अय्युहन्नबिय्यु" पारा–10 सूरह इंफ़ाल, आयत–64

× तर्जमा– ऐ नबी (अब्दुल माजिद और अशरफ़ अली थानवी देवबंदी)

× तर्जमा– ऐ पैग़म्बर (डिप्टी नज़ीर अहमद और शाह वली उल्लाह)

✓ तर्जमा– ऐ ग़ैब की ख़बरे बताने वाले (आलाहज़रत)

नोट– कुरआन मजीद में लफ़्ज़ 'रसूल' और 'नबी' कई बार आया है। इसलिए तर्जमा करने वालों की जिम्मेदारी है कि वो लफ़्ज़ 'रसूल' और 'नबी' का भी तर्जमा करें। रसूल का तर्जमा 'पैग़म्बर' को सभी जानते हैं लेकिन नबी का तर्जमा भी पैग़म्बर कर दिया जाए तो सवाल ये पैदा होता है कि अल्लाह ने कुरआन में लफ़्ज़ 'नबी' क्यूँ फ़रमाया। अल्लाह चाहता तो पूरी कुरआन में सिर्फ रसूल ही फ़रमाता। तो मुसलमानो जान लो कि ग़ैबी (छुपी) बात बताने के लिए ही नबी भेजे जाते हैं।

अब कुरबान जाइए आलाहज़रत के इश्के रसूल पर कि सरकारे दो आलम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्चाई बता दी। आलाहज़रत के इस सही तर्जमें से कई देवबंदियों को **"हार्ट अटैक"** पड़ गया क्योंकि देवबंदियों का तो यह अक़ीदा है कि "नबी को दीवार के पीछे का भी इल्म नहीं" और अगर देवबंदी नबी का तर्जमा "ग़ैब की खबरें बताने वाले" कर देते तो बेचारे देवबंदी खुद अपने ही बुने जाल में फँस जाते इसलिए लफ़्ज़ 'नबी' का तर्जमा जान बूझकर नहीं किया देवबंदियों ने।

❖ बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम का तर्जमा

× तर्जमा– शुरू अल्लाह निहायत रहम करने वाले बार–बार रहम करने वाले के नाम से। (अब्दुल माजिद दरियाबादी देवबंदी)

× तर्जमा– शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़े मेहरबान निहायत रहम करने वाले हैं। (अशरफ़ अली थानवी देवबंदी)

✓ तर्जमा– अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान रहमत वाला। (आलाहज़रत)

नोट– मुसलमानो ध्यान दो कि आलाहज़रत ने अल्लाह के नाम से शुरू किया जबकि देवबंदियों ने शुरू करता हूँ से शुरू किया अल्लाह के नाम से शुरू नहीं किया इसलिए देवबंदियों का तर्जमा गलत है और अशरफ़ अली थानवी ने आखिर में "हैं" बढ़ा दिया। अब थानवी साहब ही बताएँ कि 'हैं' किस लफ़्ज़ का तर्जमा है।

नोट– देवबंदियों से ज़्यादा गंदी इनकी किताबें हैं, इसलिए किताब ख़रीदते समय बिस्मिल्लाह के तर्जमा पर ध्यान दें। अगर किताब में तर्जमा नहीं दिया तो दुकानदार से पूछ लें कि सुन्नियों की किताब है या देवबंदियों की।

नोट– अगर आपको देवबंदियों की तर्जमें वाली कुरआन मिले तो ऊपर बताई गई ग़लतियों को ढूँढकर सही कर दें ताकि कोई दूसरा ग़लत ना पढ़े।

नोट– देवबंदियों के और ढेरों "कुरआन" के गलत तर्जमे जानने के लिए पढ़ें हमारी किताब **"सुन्नी और वहाबी में फ़र्क़"**।

वहाबियों, देवबंदियों के फैलने की वजहें

अगर वहाबी देवबंदी गलत हैं तो ये क्यों फैल रहे हैं और इन्हें कैसे रोका जाए? ये सवाल अकसर आम मुसलमानों के दिमाग में आता है। मौजूदा दौर में इस फ़ितने के फैलने की ढेरों वहजें हैं–

पहली सबसे बड़ी वजह

वहाबियों देवबंदियों ने एक बहुत बड़ी चालाकी की इन्होंने अल्लाह का कम्पटीशन (मुकाबला) अम्बिया और औलिया से करवा दिया। अल्लाह के नाम की आड़ लेकर नबी और औलिया को ख़ूब जी भर के गालियाँ दी। इनकी किताबों में ऐसी ढेरों ज़हरीली बातें लिखी हुई हैं। जिसे आप हमेशा इनके मुँह से सुनते होंगें। आइए देखें इनकी सबसे गंदी किताब **'तक़वियतुल ईमान'**। इस किताब में कुरआन और हदीस के झूठे माने ज़बरदस्ती गढ़े गए और उसकी बुनियाद पर आम मुसलमानों को काफ़िर व मुशरिक बनाने में कोई कसर नही छोड़ी गई। इस किताब के झूठे होने की दलील ये है कि इस किताब के रद्द में अब तक 250 से ज़्यादा किताबें सुन्नी उलेमा ने लिख डालीं। आइए अब इस किताब की कुछ इबलीसी बोली को पढ़ें और ऐसा बोलने से तौबा करें।

वहाबी/देवबंदी बोली– अल्लाह जो चाहे करे किसी नबी और वली के चाहे से कुछ नहीं होता।**(हवाला–तक़वियतुल ईमान, पेज नं. 69)**

जवाब सुन्नियों का– बेशक अल्लाह जो चाहे वही होता है लेकिन अल्लाह के महबूब बंदे अगर कुछ चाहते हैं तो अल्लाह अपने करम से उनकी

चाहत को पूरा कर देता है। कुरआन और हदीस में ढेरों मिसालें मौजूद हैं।

वहाबी/देवबंदी बोली– सिर्फ अल्लाह ही को माना जाए और उसके सिवा किसी को ना माना जाए। **(हवाला–तक़वियतुल ईमान, पेज 23)**

जवाब सुन्नियों का– अल्लाह को ज़रूर माना जाए और अल्लाह ने नबी और वली को मानने और ताज़ीम करने का हुक्म दिया है इसलिए उन्हें भी माना जाए।

वहाबी/देवबंदी बोली– हर छोटा बड़ा मख़लूक़ (नबी हो या ग़ैर नबी) अल्लाह की शान के आगे चमार से भी ज़्यादा ज़लील है।

(हवाला– तक़वियतुल ईमान, पेज नं. 23)

जवाब सुन्नियों का– ख़बीस वहाबियों आज से ये जान लो कि अल्लाह के यहाँ अम्बिया और औलिया चमार से ज़्यादा ज़लील नहीं बल्कि अल्लाह ने उन्हें बड़े–बड़े मरतबे अता फ़रमाये हैं। कुरआन और हदीस में ढेरों मिसालें मौजूद हैं।

वहाबी/देवबंदी बोली– वह शहंशाह एक आन में चाहे तो करोड़ों नबी मुहम्मद के बराबर पैदा कर डाले। **(हवाला– तक़वियतुल ईमान, पेज 39)**

जवाब सुन्नियों का– वह शहंशाह एक आन में सभी देवबंदियों वहाबियों को सूअर और बन्दर बना डाले। अब बताओ कि अल्लाह ऐसा कर सकता है या नहीं।

वहाबी/देवबंदी बोली– नबी हमारे बड़े भाई की तरह हैं।

(हवाला– तक़वियतुल ईमान, पेज नं. 71)

जवाब सुन्नियों का– अगर नबी तुम्हारे बड़े भाई हैं तब तो नबी की बीवियाँ तुम्हारी भाभी लगेंगी हालांकि हदीस शरीफ़ में है कि नबी की बीवियाँ सभी मुसलमानो की माँ हैं। मगर दज्जाल देवबंदियों/वहाबियों तुम्हारा दिमाग कौवा खाने की वजह से खराब हो गया है।

वहाबी/देवबंदी बोली– सब अख़्तियार अल्लाह को हासिल है किसी नबी और वली को कोई अख़्तियार नही।

जवाब सुन्नियों का– बेशक सब अख़्तियार अल्लाह के लिए है लेकिन अल्लाह ने अम्बिया और औलिया को भी बड़े–बड़ अख़्तियार दिये हैं। कुरआन और हदीस में ढेरों मिसाले मौजूद हैं।

वहाबी/देवबंदी बोली–. वो क्या चीज है जो तुम्हे नहीं मिलता अल्लाह से जिसे तुम माँगते हो औलिया से।

जवाब सुन्नियों का– चन्दा नहीं मिलता अल्लाह से जिसे देवबंदियो

तुम माँगते हो ग़ैरूल्लाह से।

दूसरी बड़ी वजह

सऊदी अरब का झाँसा– जी हाँ, मक्कार देवबंदी अपने धर्म को फैलाने के लिए आम लोगों से कहेंगें कि सऊदी अरब से इस्लाम फैला है इसलिए वहाँ पर जिसकी हुकूमत होगी वही हक पर होगा लेहाज़ा हमको उन्हीं के तरीके पर चलना चाहिए।

देवबंदियों का ये ऐसा जाल है जिसमें अक्सर आम लोग फँस जाते हैं। सुन्नी भाइयो जान लो कि इस समय अरब में वहाबियों की हुकूमत है। जो **"मुहम्मद बिन अब्दुल वहाब नज्दी"** के मानने वाले हैं। ये वही लोग हैं जिनके बारे में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पहले ही बता दिया था कि अरब के नज्द से शैतानी गिरोह निकलेगा, इनकी नमाज़ों को देख कर तुम अपनी नमाज़ों को घटिया समझोगे, इस खूबी के बावजूद ईमान इनके हलक से नीचे नहीं उतरेगा और इनका आख़िरी गिरोह दज्जाल से जा मिलेगा।

हम सभी ने देखा कि आज से 200 साल पहले ये फ़िर्क़ा **नज्द (रियाद)** से निकला। इन लोगों ने अरब पर क़ब्ज़ा जमाने के लिए ईसाइयों की मदद से लाखों बेगुनाह मुसलमानों का क़त्ल किया।

अगर कोई देवबंदी आपको सऊदी अरब के नाम पर बेवकूफ़ बनाने की कोशिश करे तो आप उससे ये चन्द सवाल पूछिये **1**–कुरआन और हदीस में ऐसा कहाँ लिखा है कि सऊदी अरब में जिसकी हुकूमत होगी वही हक पर होगा? **2**–अरब पर अहले बातिल ने भी हुकुमत की है वरना यज़ीद पलीद के बारे में देवबंदियो तुम क्या कहोगे?**3**–देवबंदियो बताओ कि अगर सऊदी अरब के वहाबी (गैर मुक़ल्लिद) तुम्हारे नज़दीक सच्चे हैं तो फिर देवबंदियो तुम उनकी तरह नमाज़ और रमज़ान में आठ (8) रकात तरावीह और दूसरे काम क्यों नहीं करते? **4**–वहाबियों के नज़दीक इमामों की पैरवी करने वाला बिद्अती और मुशरिक हैं लेकिन देवबंदियो तुम तो इमामे आज़म अबू हनीफ़ा की पैरवी करने का दावा करते हो इसलिए वहाबी नियम के हिसाब से तुम क्या हुए?

सुन्नी भाइयो आपके ये सवाल सुनकर उस देवबंदी की हालत ख़राब हो जाएगी और वो मरदूद फ़ौरन भाग खड़ा होगा।

तीसरी बड़ी वजह

वहाबियों के पीछे नमाज़– बदमज़हब को इमाम बनाना या उसके पीछे नमाज़ पढ़ना कुफ़्र है। अगर कोई ईसाई या यहूदी नमाज़ याद करके नमाज़ पढ़ाने खड़ा हो जाए तो क्या आप उसके पीछे नमाज़ पढ़ेंगें? नहीं

बिल्कुल नहीं। बल्कि जानबूझकर नमाज़ पढने की वजह से काफ़िर हो जाएँगे। इसी तरह काफ़िर वहाबियों/देवबंदियों के पीछे नमाज़ तो होगी ही नहीं उल्टा आप कुफ़्र कर बैठेगें।

वहाबियों/देवबंदियों को हमने ना कभी मुसलमान माना था, ना मानते हैं, ना मानेंगे। सुन्नियो ध्यान दो, कि पूरी दुनिया में हम सुन्नी (अहले सुन्नत व जमात) ही ऐसे हैं जो किसी भी मुरतद फिर्के के पीछे नमाज़ नहीं पढते। ये हमारे हक़ पर होने की दलील है। लेकिन सुन्नियो, तुमने हमेशा देखा होगा कि वहाबी/देवबंदी जैसे गुमराह फिर्के हम सुन्नियों को बिद्अती, मुशरिक, कबरपुजवा और गालियाँ तक देते हैं लेकिन नमाज़ हम सुन्नियों के पीछे ही पढ़ते हैं। अब आप इनसे पूछिये कि अगर हम सुन्नी कबरपुजवा हैं तो हमारे पीछे वहाबियो तुम्हारी नमाज़ें कैसे हो जाती हैं?

हाजियो ग़ौर करो– इस मुबारक सफर में आप किसी नज्दी वहाबी इमाम के पीछे नमाज़ ना पढ़ें और जानबूझकर पढ़ने की वजह से नमाज़ बर्बाद और कुफ़्र लाज़िम होगा।

चौथी बड़ी वजह

शादी विवाह– हैरत है सुन्नी अपने बाप, दादा के दुश्मनों को देखना तक पसन्द नही करते लेकिन अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दुश्मनों के यहाँ शादी–ब्याह कर लेते हैं। ख़बरदार वहाबियों, देवबंदियों के यहाँ शादी करने का मतलब ज़िना का दरवाज़ा खोलना है क्योंकि काफ़िर मुरतद से निकाह जाइज़ नहीं। अफसोस आज बहुत से लोग लाखों रूपये खर्च करके अपनी बहन बेटी को ज़िना के लिए पेश कर देते हैं।

आज कुछ लोग कहते हैं कि लड़की की शादी इनके यहाँ नहीं करनी चाहिए लेकिन वहाबियों/देवबंदियों की लड़की अपने यहाँ ले आने में कोई हर्ज नहीं। ख़बरदार मुरतद के यहाँ से लाई गई लड़की कुछ दिनों के बाद बहकी–बहकी बातें करने लगती है और धीरे–धीरे अपने शौहर (पति) को बहकाती है फिर जो औलाद पैदा होती है उस पर नाना नानी का असर ज़्यादा होता है और धीरे–धीरे पूरा घर बेदीन हो जाता है इसलिए लड़की लाना सबसे ज्यादा ख़तरनाक काम है।

पाँचवी बड़ी वजह

बदमज़हबों से रिश्ते– आज कुछ मुसलमान जाने अनजाने इन बदमजहबों से रिश्ता रखते हैं। दोस्ती और रिश्तेदारी की वजह से उनके ऊपर कई तरह के एहसान चढ़ जाते हैं और ताल्लुक़ ख़त्म नहीं कर पाते और जब

इन लोगों को मना किया जाता है तो ये कहेंगे कि एहसान नहीं भूलना चाहिए और मिलजुल कर रहना चाहिए।

ऐ मुसलमानो! अगर तुम उस बदमज़हब के एहसानों का बदला सच्चे दिल से चुकाना चाहते हो तो उस शख़्स को सच्चाई बताओ और मोहब्बत से समझाओ कि वह गलत रास्ते पर है। यही सबसे अच्छा बदला है उसके एहसानों का। अगर सच्चाई जानने के बाद भी वह ना माने तो ज़रा याद करो अल्लाह के एहसानों को जो तुम्हें खाना, पानी, पेड़ पौधे, कपड़ा, इल्म, तन्दरूस्ती जैसी ढेरों नेअमते अपने महबूब के सदक़े मे दे रहा है। अब सोचो कि किसका एहसान ज़्यादा है। किसका एहसान चुकाना ज़्यादा जरूरी है। अगर अल्लाह इन नेअमतों में से एक भी नेअमत उठा ले तो तुम्हारा क्या हाल होगा?

ऐ मुसलमानो, ऐ मुसलमानो, ऐ कुरआन के मानने वालो, ऐ अल्लाह से डरने वालो देखो तुम्हारा रब इरशाद फ़रमाता है–

कुरआन (तर्जमा)– और तुममें जो कोई उनसे दोस्ती रखेगा तो वह उन्हीं में से है, बेशक अल्लाह बेइन्साफो को राह नही देता।

(पारा 6, सूरह माएदह, आयत 51)

कुरआन (तर्जमा)– ऐ ईमान वालो! अपने बाप अपने भाईयों को दोस्त न समझो अगर वह ईमान पर कुफ़्र पसन्द करें और तुममें जो कोई उनसे दोस्ती करेगा तो वही ज़ालिम है। **(पारा 10, सूरह तौबा, आयत 23)**

कुरआन (तर्जमा)– बेशक जो लोग अल्लाह व रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ईज़ा देते हैं उन पर अल्लाह की लानत है दुनिया व आख़िरत में और अल्लाह ने उनके लिए ज़िल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा है। **(पारा 22, सूरह अहज़ाब, आयत 57)**

ऐ ईमान वालो, ऐ नबी के गुलामो, ऐ नबी से मोहब्बत करने वालो, जिस नबी मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का तुम कलमा पढ़ते हो उस नबी का फरमाने आलीशान सुनो–

हदीस– बदअक़ीदा लोग ना तुम से मिलें ना तुम उनसे मिलो कहीं तुम को गुमराह ना कर डालें कहीं तुम को फ़ितनों में ना डाल दें।

(मिश्कात शरीफ, जिल्द 1, पेज नं. 28)

हदीस– बदअकीदा और गुमराह लोग बीमार पड़ें तो पूछने न जाओ, वो मर जाएँ तो उनके जनाज़े में हाज़िर ना हो।

(मिश्कात शरीफ, जिल्द 1, पेज नं. 22)

हदीस– हज़रत हुज़ैफा रज़िअल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले

अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि खुदा–ए–तआला किसी बदमज़हब का ना रोज़ा कबूल करता है, ना नमाज़, ना ज़कात, ना हज, ना उमरह, ना जिहाद और ना कोई नफ़्ल न फर्ज़। बदमज़हब दीने इस्लाम से ऐसा निकल जाता है जैसे गुंधे आटे से बाल निकल जाता है। **(इब्ने माजा)**

हदीस– हज़रत अबू उमामह रज़िअल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि बदमज़हब दोज़ख़ के कुत्ते हैं। **(दार कुतनी)**

हदीस– हज़रते इब्राहीम इब्ने मयसरह रज़िअल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिसने बदमज़हब की इज़्ज़त की उसने इस्लाम के ढाने पर मदद की। **(मिश्कात शरीफ़)**

छठवीं बड़ी वजह

देवबंदियों का दोगलापन– आज तक देवबंदियों का यही तरीक़ा है कि जहाँ देखेंगे की सुन्नियों की तादाद ज़्यादा है वहाँ बगुलाभगत बनकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मीलाद, जश्ने मीलादुन्नबी के जलसे–जुलूस, नियाज़, फ़ातेहा, उर्स वगैरह में जाएंगे और जब दस–पाँच सीधे साधे लोगों को फँसा लेंगे तब इन्हीं कामों पर नाक भौं सिकोड़कर गरीब सुन्नियों से कुरआन व हदीस की दलील माँगेंगे और पूछेंगे कि क्या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने या सहाबा ने हर साल तारीख़ मुक़र्रर करके इस तरह के जलसे–जुलूस किये थे जो आज तुम लोग करते हो। इस देवबंदी बोली को सुनकर अक्सर आम सुन्नी मुसलमान हड़बड़ा जाते हैं।

सुन्नी मुसलमान भाइयो हड़बड़ाने के बजाए आप उस देवबंदी से ये सवाल पूछिये कि ऐ बेवकूफ़ देवबंदी! ये बता कि दारूल उलूम देवबंद का जश्न मनाना, इज्तमा के लिए तारीख़ और जगह मुक़र्रर करना, सीरत के जलसे कराना, ग़ैरूल्लाह के नाम से इदारा काइम करना। किस हदीस से साबित हैं? जिस हदीस से तुम्हारे ये जलसे–जुलूस जाइज़ हैं उसी हदीस से हम सुन्नियों के महफ़िले मीलाद, जलसे और जुलूस जाइज़ है। आपके इस जवाब को सुनकर वो देवबंदी दाँए–बाँए देखने लगेगा।

सुन्नियों का जबरदस्त अचूक हथियार– सुन्नी मुसलमान भाइयो ये एक ऐसा हथियार है कि आपके सामने कोई वहाबी/देवबंदी कभी भी नही टिक सकता। आप इसके ज़रिये इन मुरतदों को ऐसा मुँहतोड़ जवाब दे सकते हैं कि ये सुन्नियों पर ऐतराज़ करना भूल जाएगें। इस हथियार को इस्तेमाल करने का तरीक़ा ये है।

अगर कोई शख़्स आपके पास आए और इन अच्छे कामों को रोकने के लिए कहे तब आप उस शख़्स से पूछिये कि जनाब आप हमें क्यों मना कर रहे हैं? जवाब में वह शख़्स यही कहेगा कि इन कामों का सुबूत नही (हालाँकि उसका यह जवाब सरासर गलत है क्योंकि पिछले पन्नों में इन कामों के जाइज़ और मुस्तहब होने के सुबूत पेश किये जा चुके हैं।) बिल फर्ज़ मान लो कि आपको वो दलीलें याद नहीं, तो उस मना करने वाले से कहिए कि जब आप मना कर रहे हैं, तो आपकी ये ज़िम्मेदारी है कि आप शरीअत से कोई ऐसी दलील पेश करें कि जिसमें इन कामों को ना करने का हुक्म हो मतलब कुरआन और हदीस में कहाँ लिखा है कि इन कामों को नहीं करना चाहिए?

आपका यह जवाब सुनकर वह मना करने वाला एकदम से बौखला जाएगा। अगर मना करने वाला एकदम जाहिल है तो वह यही कहेगा कि मना होने के लिए दलील की क्या ज़रूरत यह काम तो बिद्अत है इसलिए नहीं करना चाहिए। तब आप उससे सवाल पूछिये कि अगर बिद्अत है तो कौन सी बिद्अत है? ● बिद्अते हसना है? ● कि बिद्अते सय्येआ है? ● कि बिद्अते मुहर्रमा है? ● कि बिद्अते मकरूहा है? ● कि बिद्अते वाजिबा है? ● कि बिद्अते मुबाह है? ● कि बिद्अते मुस्तहबा है? इनमें से किस किस्म की बिद्अत है? आपका यह सवाल सुनकर वो फ़ौरन कुत्ते की तरह दुम दबा कर भाग जाएगा।

अब मान लीजिए कि आपको दलीलें याद है और आपने उसे बताया। अगर मना करने वाला थोड़ा कुछ पढ़ा हुआ है तो वह आपकी पेश की गई जाइज़ दलीलें सुनकर यह जवाब देगा कि आपने जो दलाइल पेश किए हैं वह सब ज़ईफ़ हैं।

वाह! क्या कहना इनकी मक्कारी का जब मना होने की दलील नही मिली तो जाइज़ होने की दलीलों को ज़ईफ़ कह दिया।

ख़ैर कोई बात नही, अब उस मना करने वाले से आप कहिए कि अगर हमारी पेश की गई दलीलें जब आपके नज़दीक "ज़ईफ़" हैं, तो आप पर लाज़िम है कि मुमानेअत (मना होने) की ऐसी दलील पेश करें, जो हमारी दलीलों के मुकाबले में ज़्यादा क़वी और मज़बूत हो।

वह मना करने वाला आपकी इस बात का जवाब क्या देगा बल्कि आपकी बातें सुनकर ऐसा गायब होगा जैसे गधे के सर से सींग गायब होती है।

सातवीं बड़ी वजह

देवबंदियों ने किया अंसारी बिरादरी के साथ धोखा– अंसारी बिरादरी मुल्क की एक इल्म दोस्त बिरादरी है। आज अंसारी बिरादरी में जितने हाफ़िज़, क़ारी, मौलवी, आलिम, फ़ाज़िल मिलेंगे कि दूसरी बिरादरी में मिलना

मुश्किल है। अरबी व फ़ारसी का लगभग 50% बोझ अपने कंधे पर उठा रखा है। इसलिए देवबंदी मौलवियों ने अपनी तादाद बढ़ाने और अंसारी बिरादरी को अपनी तरफ़ मिलाने के लिए यह झूठ फैलाया कि इमाम अहमद रज़ा ने अंसारी बिरादरी को गाली दी है। इस तरह अंसारी बिरादरी के कई लोग देवबंदियों की तरफ चले गए। अंसारी बिरादरी की आड़ लेकर देवबंदी उलेमाओं ने हमारे इमाम और मसलके आलाहज़रत को जख़्मी करने की कोशिश की। इसलिए मजबूरन वो इबारतें जो अंसारियों के ख़िलाफ़ खुद उलमाए देवबंद ने लिखी हैं उसे पेश करना पड़ रहा है ताकि हक़ीक़त सामने आ जाए कि खुद उलमाए देवबंद का क्या अक़ीदा है अंसारियों के बारे में। आइए देखें–

1. मसला– पेशा में बराबरी ये है कि **जुलाहे** दर्जियों के मेल और जोड़े के नहीं। इसी तरह नाई, धोबी वगैरह भी दर्जी के बराबर नहीं। **(हवाला– बहिश्ती ज़ेवर, पेज 194,लेखक–अशरफ़ अली थानवी देवबंदी)**

2. हिकायत न0 261– मौलवी फ़ारूक़ साहब ने फ़रमाया कि मौलाना अहमद हसन साहब देवबंदी ने इरशाद फरमाया कि जब मैं अव्वल–अव्वल मौलाना क़ासिम साहब की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो मौलाना मुहम्मद साहब की ख़िदमत में एक **जुलाहा** आया और दावत के लिए अर्ज़ किया। मौलाना मुहम्मद साहब ने मंजूर फ़रमाया। ये अम्र मुझको बहुत नागवार हुआ। इतना कि जैसे किसी ने गोली मार दी कि भला **जुलाहे** की दावत भी मंजूर कर ली अलख़। **(हवाला– अरवाहे सलासा, पेज नं. 261)**

3. जुलाहा दो दिन नमाज़ पढ़ कर (अपनी कम अक़्ली की वजह से) वही का इन्तेज़ार करता है। **(हवाला– मुसन्निफ़ मौलवी अशरफ़ अली थानवी देवबंदी दर मतबुआ इमदादुल मताबेअ थाना भवन जिलहिज्जा 1366 हि0, पेज नं. 25)**

आठवीं बड़ी वजह

सुन्नियों की कुछ बेवकूफ़ियाँ– आज हम सुन्नी कुछ ऐसे बेवकूफ़ी वाले कामों को करते हैं जिसकी वहज से वहाबियों को हम पर ऐतराज़ करने का मौक़ा मिल जाता है। ऐसी ढेरों बेवकूफ़ियों की लिस्ट ये है।

पहली सबसे बड़ी बेवकूफ़ी

नमाज़ में लापरवाही– ईमान अकीदा सही करने के बाद सब फ़र्ज़ों से बड़ा फ़र्ज़ नमाज़ है। जिसे हर हाल में अदा करना बहुत ज़रूरी है। लेकिन आज बहुत से मुसलमान हँसी–मजाक़, फ़िल्मों, गानों और दुनियादारी के

चक्कर में नमाज़ जैसी क़ीमती चीज़ को गवाँ देते हैं। आज मस्जिदें सुनसान नज़र आती हैं। जब इस तरह की ख़ाली मस्जिदों पर ख़बीस देवबंदियों का क़ब्जा हो जाता है तब यही सुन्नी बाद में रोना रोऐंगे कि वो मस्जिद हाथ से चली गई। यही है नमाज़ ना पढ़ने की वजह से अल्लाह की लानत।

मुसलमानो! अगर आपको पाँच वक़्त की नमाज़ पढ़ने में शर्म या बोझ महसूस हो रहा है तो समझ लीजिए कि आपके ऊपर शैतान का दाँव चल गया और क़ब्र में पिटने के लिए तैयार रहिए।

जो नमाज़ी नहीं वह सही मायने में आशिक़े रसूल नहीं है और जो आशिक़े रसूल होगा उसको नमाज़ पढ़े बगैर चैन ही नहीं मिलेगा।

खुद से पूछिये– कि आख़िर आप नमाज़, रोज़े पर अमल क्यों नहीं कर पा रहे हैं? आपकी राह में कौन सी मुश्किल आ रही है? इन मुश्किलों को कैसे दूर किया जाए। इन सवालों को आप खुद से पूछिये और खुद ही जवाब दीजिए क्योंकि मरने के बाद सोचने और पछताने का मौक़ा नही मिलेगा। कल मैदाने महशर में कोई बहाना ना चलेगा।

दूसरी बेवक़ूफ़ी

आज सुन्नी कहलाने वालों में से एक बड़ी तादाद उन लोगों की है जो नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात जैसे फर्ज़ इबादतों को बिना किसी शरई उज़्र के छोड़ते हैं लेकिन फ़ातेहा, मीलाद, उर्स और दरगाहों पर हाज़िरी जैसे सुन्नत व नफ़ली कामों को क़ज़ा नहीं होने देते। अरे भाइयो इन कामों (फ़ातेहा, मीलाद, उर्स) को बेशक करते रहना चाहिए कि आज के दौर में ये सुन्नियों की पहचान हैं लेकिन इन कामों को फ़र्ज़ या वाजिब समझ कर ना करें। उल्माए अहले सुन्नत के फ़तवों में कहीं भी इन कामों को फ़र्ज़ या वाजिब नहीं कहा गया है।

तीसरी बेवक़ूफ़ी

मज़ार शरीफ़ पर हाज़िरी देते वक़्त कम से कम चार हाथ की दूरी पर रहने का हुक्म है लेकिन कुछ लोग मज़ार शरीफ़ के बिल्कुल क़रीब जाकर अपना सिर, आँखें, माथा वगैरह रगड़कर हद से ज़्यादा अक़ीदत का इज़हार करते है। कुछ लोग मज़ार शरीफ़ के पास सज्दे की सी हालत में हो जाते हैं हालांकि वह सज्दा नहीं वहाँ सज्दे की शराअत नहीं पाई जाती लेकिन इससे वहाबियों/देवबंदियों को सुन्नियों पर ऐतराज़ करने का मौक़ा मिल जाता है। इसलिए इससे बचना चाहिये और मज़ारों पर हाज़िरी का सही तरीक़ा सीखना चाहिए। सज्दा ए ताज़ीमी शरीअत में ग़ैरखुदा के लिए हराम है।

चौथी बेवकूफ़ी

औरतों का मज़ाराते अम्बिया, औलिया और सालेहीन की क़ब्रों की ज़ियारत करना सुन्नत व मुस्तहब है, जो बहुत सारी हदीसों से साबित है। लेकिन आजकल बेहयाई और बेपरदगी बहुत ज़ोरों पर है इसलिए मौजूदा हालात में औरतों को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रौज़ा ए मुबारक के अलावा किसी और की क़ब्र पर जाने को सभी सुन्नी उलमा ने फ़ितनों की वजह से हराम माना है।

पाँचवी बेवक़ूफ़ी

तीजा, चालीसवाँ, बरसी बेशक जाइज़ है और इसका मक़सद गरीबों का पेट भरना है और उसे एक वक़्त की रोटी की फ़िक्र से आज़ाद करना है लेकिन आज हम अपने रिश्तेदारों और दोस्तों को बड़ी इज़्ज़त से खिलाते हैं और उस ग़रीब को जो इस खाने का असली हक़दार है या तो बुलाते नहीं या उसे वह इज़्ज़त नहीं देते। गोया की दावत और रस्म बन गई है। इससे बचना चाहिए। गरीबों को जरूर खिलाना चाहिए।

छठवीं बेवकूफ़ी

ताज़ियादारी– आज मोहर्रम के दिनों में लोगों ने ताज़ियादारी के नाम पर जितनी नाजाइज़ बातें निकाल रखी हैं कि अल्लाह की पनाह शायद ही किसी महीने में होती हों। आइए इस पेचीदा मसले को शुरू से समझें।

ताज़िया क्या है?– लफ़्ज़े ताज़ियत से ताज़िया निकला है। इन दोनो शब्दों में फ़र्क़ यह है। **1.** किसी के दुख दर्द में उसकी पुरशिश करना ताज़ियत कहलाता है। ये जाइज़ है क्योंकि ये रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत है। **2.** ताज़िया के लुग्वी मअनी हैं "हज़रत इमाम हुसैन रज़िअल्लाहो अन्हो के रौज़ा ए मुबारक का हूबहू नमूना (Model) या नक़्शा"। जो जाइज़ है। जैसे– नालैन पाक का नक़्शा बनाना, गुम्बदे ख़ज़रा और काबा शरीफ़ का नक़्शा या नमूना बनाना और इसे रखना सिर्फ़ जाइज़ ही नहीं बल्कि बाइसे बरकत व रहमत भी है।

मौजूदा ताज़ियादारी हराम क्यूँ– जब ताज़िया जाइज़ है तो सवाल यहाँ यह पैदा होता है कि उलमा–ए–कराम ने इस जाइज़ काम को नाजाइज़ व हराम क्यूँ क़रार दिया। यह बहुत आसान सी बात है। इसे आप इस तरह समझ सकते हैं–

नाते पाक रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पढ़ना बिलाशुबह जाइज़ है लेकिन यही नाते पाक अगर ढोल बाजे के साथ पढ़ा जाए तो इसका पढ़ना

हराम होगा क्योंकि अल्लाह व रसूल के पाक ज़िक्र में ढोल–बाजा जैसी हराम चीजें शामिल हो गईं इसलिए ये पाक ज़िक्र भी हराम हो जाएगा।

इसी तरह आज की मौजूदा ताज़ियादारी में भी लोगों ने बहुत सारी गैर शरई और हराम चीजें शामिल कर ली हैं ज़ैसे– तरह तरह के ताज़िये बनाकर उन्हे गली–गली टहलाना, उनके साथ ढोल बाजा होना, मातम करना, ताजियों के अन्दर हज़रत इमाम हसन और इमाम हुसैन रज़िअल्लाहो अन्हुमा की मसनूई क़ब्रें बनाना, नौ मोहर्रम को रात भर औरतों व मर्दों का घूम–घूम कर तख़्त देखना, खेल, तमाशे, रोटी वगैरह लुटाकर रिज़्क़ की बेअदबी करना, मसनूई करबला बनाना, मोहर्रम की दसवीं तारीख़ को इन ताज़ियों को तोड़–फोड़ कर मसनूई करबला में दफ़न कर देना। इसी तरह के और ढेरों खुराफ़ात में सुन्नी मुसलमान शामिल हैं। जिसकी बुनियाद पर सभी सुन्नी आलिमों ने मौजूदा ताज़ियादारी को हराम कहा है।

आलाहज़रत ने अपनी किताबों में पचासों जगह मौजूदा ताज़ियादारी को हराम लिखा है। आलाहज़रत लिखते हैं "अव्वल तो नफ़्से ताज़िया में रौज़ा ए मुबारक की नक़ल महफ़ूज़ न रही। हर जगह नई तराश नई गढ़ंत है, जिसे उस नक़ल से कुछ निस्बत नहीं। फिर कूचा ब कूचा व दस्त ब दस्त इशाअते गम के लिए उनका गश्त और उसके गिर्द सीना ज़नी और मातम साज़ी का शोर। कोई उन तस्वीरों को झुककर सलाम कर रहा है कोई मश्गूले तवाफ़, कोई सज्दे में गिरा है, कोई उन कागज़ और पन्नी से मुरादें मिन्नतें माँगता है, हाज़त रवा जानता है, फिर बाक़ी तमाशे, बाजे, ताशे, मर्दों औरतों का रातों को मेले और तरह–तरह के बेहूदा खेल............अब के ताज़ियादारी इस तरीक़ा ना मुजिया का नाम है कतअन बिद्अत व नाजायज़ व हराम है"।

(हवाला– फ़तावा रज़विया, जिल्द 9, पेज नं. 35,36)

कुछ लोग कहते हैं कि ताज़ियादारी और उसके साथ–साथ ढोल बाजे और मातम करते हुए घूमने से इस्लाम और मुसलमानों की शान ज़ाहिर होती है, यह एक फुजूल बात है। अरे भाई अगर शान की ही इतनी फ़िक्र है तो पाँच वक़्त की नमाज़ बाजमाअत अदा करने की फ़िक्र डाल लीजिए, इससे ज़्यादा मुसलमानों की शान ज़ाहिर करने वाली कोई दूसरी चीज़ नहीं।

कुछ लोग समझते हैं कि ताज़ियादारी सुन्नियों का काम है और इसे मना करना काफ़िर वहाबियों, देवबंदियों का काम है। यह एक इल्ज़ाम है। मौजूदा ताज़ियादारी को सभी सुन्नी आलिमों ने हराम कहा है और हिन्दुस्तान में वहाबियों, देवबंदियों के पैदा होने से पहले के दौर के सुन्नी आलिम व बुज़ुर्ग

हज़रत शेख़ मुहद्दिस देहलवी लिखते हैं "यानी अशर ए मुहर्रम में जो ताज़ियादारी होती है गुम्बदनुमा और तस्वीरें बनाई जाती हैं यह सब नाजाइज़ है"। (हवाला– फ़तावा अज़ीज़िया, जिल्द 1, पेज नं. 75)

सुन्नी मुसलमान भाइयों से अपील है कि इस्लामी नुक़्ते नज़र से सुन्नी उलेमा के फतवों के मुताबिक़ जाइज़ और नाजाइज़ कामों को समझे और पढ़ने वालों से गुजारिश है कि ज़िद और हठधर्मी से काम ना लें। मौत, क़ब्र और आख़िरत को पेशे नज़र रखें।

मुसलमान मोहर्रम किस तरह मनाए?– आशूरह के दिन 10 कामों को उलमा–ए–कराम ने मुस्तहब(अच्छा काम) लिखा है जिन्हें करना चाहिये– **1.**गुस्ल करना **2.**रोज़ा रखना **3.**नवाफ़िल पढ़ना **4.**सच्चे वाक़ियात के साथ ज़िक्रे शहादत की महफ़िल सजाना **5.**शहीदाने करबला के लिए फ़ातेहा करना **6.**सदक़ा करना **7.**यतीमों के सिर पर हाथ फेरना **8.**मरीजों की अयादत करना **9.**शर्बत या पानी पिलाना या खाना खिलाना **10.**नाखून तराशना।

मुसलमानो जो गलतियाँ अभी तक हो चुकी हैं उन्हें भूलकर अब आगे की सोचो और इस्लाम में पूरे के पूरे दाखिल हो जाओ क्योंकि इस्लाम एक सच्चा सीधा रास्ता है। इस रास्ते पर चलकर तुम कामयाबी की मंजिल को पा सकते हो। इस सीधे सच्चे रास्ते पर चलने के लिए इल्म की ज़रूरत पड़ती है इसलिए सुन्नी मुसलमान भाइयो–

आओ इल्म हासिल करें – इल्म एक रोशनी है जिसके बग़ैर दुनिया भी अंधेरी रहती है और आख़िरत भी। नक़ल से या थर्ड या सेकेण्ड डिवीज़न में डिग्री हासिल कर लेने को इल्म हासिल करना नहीं कहते। यह कम्पटीशन का दौर है इसलिए इल्म हासिल करने में सबसे आगे निकलना बहुत ज़रूरी है। इस दौर के मुसलमान दुनिया और आख़िरत दोनो मैदानों में पीछे नज़र आते हैं क्योंकि मुसलमानों ने अपने आक़ा नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस फ़रमाने आलीशान को भुला दिया– **"इल्मेदीन का सीखना हर मुसलमान मर्द और औरत पर फ़र्ज़ है"**।

आजकल लोग दीनी बातों जैसे नमाज़, रोज़ा, पाकी–नापाकी, हज, ज़कात के मसाइल नहीं जानते और सीखने की कोशिश भी नहीं करते और मज़हबे इस्लाम के ख़िलाफ़ चलते हैं और रोकने पर कहेंगे कि हम जानते ही नहीं हैं लिहाज़ा हम से कोई सवाल न होगा और बरोज़े हश्र हम छोड़ दिये जाऐंगे। यह उन लोगो की ग़लतफ़हमी है। सच्चाई तो ये है कि ऐसे लोगों

को डबल सज़ा मिलेगी। **पहला** इल्म हासिल न करने और आलिम से ना पूछने की। **दूसरा** ग़लत काम करने की।

<u>आओ अब दीन पर चलें</u>– कोई भी आम इन्सान दीनी इल्म डायरेक्ट अपनी माँ के पेट से सीख कर नहीं आता। दीनी बातों को कोई बचपन में तो कोई जवानी में तो कोई बुढ़ापे में सीखता है, इसलिए शर्माइए नहीं, अभी भी वक़्त है इल्मे दीन सीखने के लिए। ईमान दुरूस्त करने के बाद हर मुसलमान की ये ज़िम्मेदारी है कि वो अल्लाह की इबादत और बन्दगी करे। अल्लाह की इबादत करने के लिए हम नमाज़ पढ़ते हैं, रोज़ा रखते हैं, माल की ज़कात देते हैं, हज करते हैं। इन कामों को अदा करने का एक ख़ास तरीक़ा है जो हर मुसलमान को मालूम होना बहुत ज़रूरी है। आइये अब हम एक–एक करके इन इबादतों के बारे में जानें समझें और अमल करें।

① **<u>नमाज़ का बयान</u>**– हर आक़िल बालिग़ मुसलमान मर्द और औरत पर पाँच वक़्त की नमाज़ फ़र्ज़ है। जो इसकी फर्ज़ियत को ना माने वह काफ़िर है और जानबूझकर छोड़ने वाला सख़्त गुनहगार है।

नमाज़ ज़रूरी क्यों?– क्योंकी महशर के दिन सबसे पहले नमाज़ का सवाल होगा। हदीस शरीफ़ में है कि जो शख़्स नमाज़ की हिफ़ाज़त करेगा उस के लिए नमाज़ क़यामत के दिन नूर, दलील और नजात होगी।

हदीस– जब बच्चे कि उम्र सात बरस की हो तो उसे नमाज़ पढ़ना सिखाया जाए और जब दस बरस का हो जाए तो मार कर पढ़वाना चाहिए।

(अबूदाऊद शरीफ़)

नमाज़ कैसे पढ़ें?– नमाज़ पढ़ने के लिए आपको सबसे पहले गुस्ल का तरीक़ा, वज़ू का तरीक़ा फिर नमाज़ में कब, क्या और किस तरह पढ़ा जाए? नमाज़ में किस तरह उठा बैठा जाए? इन सब चीज़ों का तरीक़ा मालूम होना चाहिए। आप ये सब तरीके नही जानते तो हमारी वेबसाइट से सीखे www.sunnijamaat.net पर या फिर नीचे दिये गये दो तरीक़ों को अपनाएँ –

पहला तरीक़ा– आप अपने नज़दीकी मस्जिद या मदरसे के आलिम या हाफ़िज़ से मिलकर इन चीज़ो का तरीक़ा पूछें या अपने किसी दोस्त या जान पहचान वाले से पूछें। शर्माएँ नहीं। ऐसा हो ही नही सकता कि आप पूछने जाएँ तो वो आपको ना बताएँ बल्कि आपके दीनी जज़्बे को देखकर सब खुश होगें।

दूसरा तरीक़ा– किताबों का सहारा लीजिए। आप अपने नज़दीकी दीनी दुकान पर जाकर रज़वी पब्लिकेशन की छपी **"सच्ची नमाज़"** नाम की किताब ख़रीदिए। इसकी क़ीमत लगभग 10 रूपए है।

इस किताब मे आपको नमाज़ के साथ–साथ वजू ,गुस्ल, तयम्मुम, कलमा, अज़ान, दुआयें, नमाज़े जनाज़ा पढ़ने का तरीक़ा जैसी ढेरों जानकारियाँ हिन्दी और अरबी में एक साथ मिलेंगी। इसके अलावा आप हमारी वेबसाइट पे जाकर नमाज के 400 से ज़ाइद मसाइल सुन कर सीख सकते है।

जब आप नमाज़ पढ़ना सीख जाएँ तब आप अपनी पिछली छूटी नमाज़ों को अदा करें।

<u>**उम्र भर की क़ज़ा नमाज़ों को अदा करने का तरीक़ा (क़ज़ा ए उम्री)**</u>– ऐसे लोग जिनकी पिछली फ़र्ज़ नमाज़ें बाकी हैं वो क़ज़ा नमाज़ें पढ़ें। क़ज़ा नमाज़ें जल्द से जल्द अदा करना बहुत ज़रूरी है मालूम नहीं कि कब मौत आजाए। आपको फुर्सत का जो भी वक़्त मिले उसमें क़ज़ा नमाज़ें पढ़ते रहें यहाँ तक कि पूरी हो जाएँ। कोशिश करें कि क़ज़ा नमाज़ें छुपकर पढ़ें।

हुज़ूर आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा ने क़ज़ा नमाज़ें पढ़ने का आसान तरीका बताकर मुश्किल आसान कर दी।

इस सिलसिले में हुज़ूर आलाहज़रत इरशाद फ़रमाते हैं कि– एक दिन की बीस रकअ़तें होती है यानी फ़ज्र के फ़र्ज़ो की दो रकआ़त और ज़ोहर की चार रकआ़त और असर की चार रकआ़त और मग़रिब की तीन रकआ़त और इशा की सात रकाअ़त यानी चार फ़र्ज़ और तीन वितर।

उम्र भर की क़ज़ा नमाज़ों का हिसाब– जिस ने कभी नमाज़ ही ना पढ़ी हो और अब तौफ़ीक़ हुई और क़ज़ाए उम्री पढ़ना चाहता है तो वह जब से बालिग़ हुआ उस वक़्त से नमाज़ो का हिसाब लगाए और तारीख़े बुलूग़ (बालिग़ होने की तारीख़) भी नहीं मालूम तो एहतियात इसी में है कि औरत नौ साल की उम्र से और मर्द बारह साल की उम्र से नमाज़ों का हिसाब लगा कर पढ़े और जल्द पढ़े कम न पढ़े। अगर ज़्यादा हो जाये तो हरज नहीं की नफ़्ल में शुमार हो जायेंगी। **(फ़तावा रज़विया, जिल्द- 8, पेज नं. 104)**

क़ज़ा नमाज़ों का हिसाब आसानी से रखने के लिए हमारी टीम ने एक पेज तैयार किया है जिसे आप हमारी वेबसाइट से डाउनलोड कर सकते है। या फिर **www.sunnijamaat.net/qaza.pdf** को अपने मोबाइल या कम्पयूटर के URL या Address Bar में हूबहू लिख कर पेज डाउनलोड कर सकते है। फिर 5 या 10 रूपये देकर पेज 1 और 2 का प्रिंट–आउट निकलवाले। पेज को कैसे इस्तेमाल करे? इसका तरीका पेज में ही दिया है।

या फिर आप WANT QAZA लिख कर 8687549224, 8934888526 पर हमें व्हाट्स–एप करिये या फिर हमे iamsunni999@gmail.com पर email भेजिये। इंशाअल्लाह हम आपको क़ज़ा नमाज को हिसाब करने की PDF भेज देंगें।

कज़ा करने मे तरतीब— पढ़ने वाले को इख़्तियार है कि चाहे तो पहले फ़ज्र की सब नमाज़ें अदा कर ले फिर तमाम ज़ोहर की नमाज़ें इसी तरह असर फिर मग़रिब और इशा की पढ़े।

फ़र्ज़ नमाज़ें बाक़ी हों तो नफ़िल नमाज़ कुबूल नहीं होती— कज़ा नमाज़ें नफ़िल नमाज़ों से ज़्यादा क़ीमती और अहम हैं इसलिए ऐसे लोग नफ़िल नमाज़ों की जगह क़ज़ा नमाज़ें पढ़ें ताकि क़ज़ा जल्द ख़त्म हो जाए।

क़ज़ा ए उमरी का तरीक़ा (हनफ़ी)

नीयत का तरीक़ा— नीयत की मैंने सबसे पहली फ़ज्र की (या पहली जुहर या अस्र की) जो मुझसे क़ज़ा हुई। वास्ते अल्लाह तआला के, मुँह मेरा काबा शरीफ़ की तरफ अल्लाहु अकबर। (हर बार इसी तरह नीयत करें)

पहली आसानी— अगर चार फ़र्ज़ पढ़ रहे हैं तो तीसरी और चौथी रकात में "अलहमदो" शरीफ़ ना पढ़कर उसकी जगह तीन बार **"सुबहानल्लाह"** कह कर रूकूअ मे चले जाएँ।

दूसरी आसानी— रूकूअ मे तीन बार "सुबहा—न रब्बियल अज़ीम" कहने की बजाए एक बार कहें। इसी तरह सज्दे मे तीन बार "सुबहा—न रब्बियल् आला" कहने की बजाए एक बार कहें।

तीसरी आसानी— अत्तहीयात पढ़ने के बाद **"अल्लाहुम—म स़ल्लि अ़ला सय्यिदिना मुहम्मदियूँ व आलिही"** पढ़कर सलाम फेर दें। अत्तहियात के बाद दोनो दरूद और दुआ ना पढ़ें।

चौथी आसानी— इशा कि वितर की तीसरी रकअत मे दुआए कुनूत की जगह तीन या एक बार **"रब्बिग़फ़िरली"** कहें और रूकूअ मे चले जाएँ।

नोट 1— मगर वितर की तीनों रकाअतो मे अलहमदो शरीफ़ और सूरत दोनो ज़रूर पढ़ें।

2— मस्जिद में या लोगों की मौजूदगी मे अगर वितर की कज़ा करें तो तकबीरे कुनूत के लिए हाथ ना उठाएँ।

3— नमाज़ के बाक़ी हिस्से को आम तरीक़े से पढ़ें।

4— सफ़र की नमाज़े क़स्र ही पढ़ी जायेंगी।

5— तरावीह की क़ज़ा नहीं होती।

ध्यान दें A— सूरज निकलने से लेकर बीस मिनट बाद तक और सूरज डूबने के बीस मिनट पहले से सूरज डूबने तक कोई नमाज़ जाइज़ नहीं। इसी तरह ठीक दोपहर (ज़वाल का वक़्त) ये तक़रीबन चालिस पचास मिनट होता है। इन वक़्तो में किसी भी तरह की नमाज़ पढ़ना जाइज़ नही। **(हवाला—फतावा रज़विया)**

B– आज अक्सर लोग नमाज़ में पैन्ट या पाजामे की मोरी पाँयचे को लपेट कर चढ़ाते हैं, जो मकरूहे तहरीमी है। हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम ने फ़रमाया कि मुझे हुक्म दिया गया कि मैं सात हड्डियों पर सज्दा करूँ– पेशानी, दोनो हाथ, दोनो घुटने और दोनो पंजे और यह हुक्म दिया गया कि मैं नमाज़ में कपड़े और बाल न समेटूँ। **(मिश्कात शरीफ़, पेज 83)** इस हदीस में साफ–साफ कहा गया है कि नमाज़ में कपड़े का मुड़ा या सिमटा या चढ़ा हुआ नहीं होना चाहिए।

C– कुछ लोग नमाज़ में कुरआन की तिलावत करते वक़्त सिर्फ़ होंट हिलाते हैं और आवाज़ बिल्कुल नहीं निकालते हैं। इस तरह पढ़ने से नमाज़ नहीं होगी। आहिस्ता पढ़ने का मतलब यह है कि कम से कम इतनी आवाज़ निकले कि कोई रूकावट न हो तो खुद सुन लें। इसी तरह नमाज़ के बाहर भी कुरआन कम से कम इतनी आवाज़ में पढ़े कि खुद सुन ले।

② रोज़े का बयान– रोज़ा शरीअ़त में उसे कहते है कि इंसान अल्लाह तआला की इबादत की नीयत से सुबह सादिक़ से लेकर सूरज डूबने तक अपने आप को जानबूझकर खाने पीने और हमबिस्तरी (sex) से रोके रखे।

रमज़ानुल मुबारक का फर्ज़ रोज़ा– रमज़ान के पूरे महीने रोज़ा रखना हर आक़िल व बालिग़ मुसलमान पर फ़र्ज़ है। रोज़े की फ़र्ज़ियत को न मानने वाला काफ़िर और जानबूझकर छोड़ने वाला सख़्त गुनहगार है। इस दौरान सिर्फ़ औरत को हैज़ निफास की हालत में रोज़े की इजाज़त नहीं लेकिन बाद मे उन रोज़ों की क़ज़ा वाजिब है। अगर किसी मजबूरी की वजह से रोज़ा न रख सके तो आइन्दा रमज़ान का महीना आने से पहले उसकी क़ज़ा पूरी करे। अगर खुदा न ख़ास्ता रोज़ा नही रख सकता और क़ज़ा भी नहीं रख सकता तो उसका फ़िदिया अदा करे अगर जान बूझ कर रोज़ा तोड़ा तो उसका कफ़्फ़ारा अदा करना होगा।

कफ़्फ़ारा लाज़िम होने की शर्तें– माहे रमज़ान में रोज़ा रखने की नीयत की मगर न रखा। या जानबूझ कर रोज़ा तोड़ा और ग़िज़ा या दवा खाई तो रोज़ा का कफ़्फ़ारा होगा और क़ज़ा भी होगी। इसी तरह अगर रोज़े की हालत में जमाअ़ (sex) किया अगर मियाँ बीवी दोनों रोज़ेदार हों तो दोनों पर कफ़्फ़ारा लाज़िम होगा।

कफ़्फ़ारा यह है कि एक रोज़े के बदले एक गुलाम आज़ाद करे। अगर वह न कर सके तो लगातार साठ रोज़े रखे अगर बीच मे एक रोज़ा भी छूट जाए तो दोबारा फिर से रोज़े शुरू करे अल्बत्ता औरत हैज़ व निफास के दिन छोड़ कर उसके बाद रोज़ों की तादाद पूरी करे। अगर ये भी न कर सके

तो साठ (60) मिस्कीनों को दो वक़्त भरपेट खाना खिलाए अगर एक बार में खाना खिलाने की हैसियत नहीं है तो रोज़ाना दोनों वक़्त में दो–दो मिस्कीनों को खाना खिलाए।

नोट 1– ईद के दिन और बक़राईद के दिन फिर बक़राईद के बाद ग्यारह, बारह और तेरह ज़िल्हिज्जा को रोज़ा रखना मकरूहे तहरीमी है।

2– रोज़ा रखने की मिन्नत मानी तो काम पूरा होने पर रखना वाजिब है।

3– नफ़्ल रोज़ा रखकर तोड़ दिया तो अब इसकी क़ज़ा वाजिब है।

4– रोजा रमज़ान के 150 से ज्यादा मसाइल सुनने और सीखने के लिए हमारी वेबसाइट www.sunnijamaat.net देखें।

मुर्दे की नमाज़ और रोज़े कैसे अदा हो– कोई शख़्स नमाज़ रोज़ा बग़ैर अदा किये ही मर गया और अब मौत के बाद सज़ा मे गिरफ़्तार है कि अब न तो अदा करने की ताक़त है न इससे छूटने का कोई तरीक़ा।

शरीअते मुतह्हरा ने इस बेबसी की हालत मे उस मैयत की दस्तगीरी करने के कुछ तरीक़े तजवीज़ फ़रमा दिये कि अगर मैयत के घरवाले या जान पहचान वाले इस तरीक़े को अपनाएँ तो बेचारा मुर्दा अज़ाब से छूट जाए। इस तरीक़े का नाम **इस्क़ात** है।

इस्क़ात करने का तरीक़ा और नमाज़ का फ़िदिया– सबसे पहले मैयत की उम्र मालूम करें फिर इसमे से नौ साल औरत के और बारह साल मर्द के नाबालिग़ी के घटा दें। अब जो बचे उसमे हिसाब लगाएँ कि कितने समय तक वह (यानी मरहूम) ने नमाज़ पढ़ी और रोज़े रखे और कितने नमाज़ रोज़े इसके ज़िम्मे कजा की बाक़ी हैं। ज़्यादा से ज़्यादा अन्दाज़ा लगा लीजिए।

जैसे– मान लीजिए कि मरहूम आदमी की उम्र पचास (50) साल थी अब इसमे से बारह (12) साल नाबालिग़ी के घटा दीजिए तो बची अड़तिस (38) साल। अब अन्दाज़ा लगाने पर मालूम हुआ कि उस मरहूम ने लगभग आठ (8) साल की नमाज़ें अपनी ज़िंदगी मे अदा की थीं। तो अब इस आठ (8) साल को उसकी बची हुई उम्र मे से घटा दें तो बचेगा तीस (30) साल मतलब मरहूम तीस (30) साल तक बेनमाज़ी रहा। इसी तरह रोज़े का भी अन्दाज़ा लगा लें कि कितने रोज़े उसने (यानी मरहूम) ने नही रखे। अब हर एक नमाज़ का एक सदक़ा ए फ़ित्र ख़ैरात कीजिए। एक सदक़ा ए फ़ित्र की मिक़दार तक़रीबन दो किलो पैंतालिस ग्राम गेहूँ या इसका आटा या इसकी रक़म है। और एक दिन की छः नमाज़ें (पाँच फ़र्ज़ और एक वितर वाजिब) हैं।

अब मान लीजिए की दो किलो पैंतालिस ग्राम गेहूँ का मौजूदा भाव आपके इलाके में 35 रूपए हो तो एक दिन की छः (6) नमाज़ों का 210 रूपए होगा और तीस (30) दिन का 6,300 रूपए और 12 महीने मतलब एक साल

का 75,600 रूपए हुए। अब अगर किसी मैयत पर तीस (30) साल की नमाजें बाकी हैं तो फ़िदिया अदा करने के लिए 22,68,000 रूपए ख़ैरात करने होगें।

ज़ाहिर है कि हर शख़्स इतनी रक़म ख़ैरात करने की ताक़त नहीं रखता। इसके लिए उलमा ए कराम ने शरई हीला इरशाद फ़रमाया है। मसलन वह तीस (30) दिन की तमाम नमाज़ों का फ़िदिया 6,300 रूपए किसी फ़क़ीर को दें। ये तीस दिन (एक महीना) की नमाज़ों का फ़िदिया हो गया। अब वह फ़क़ीर ये रक़म देने वाले को ही तोहफ़े में वापस लौटा दे।

अब दोबारा तीस दिन(एक महीना) की नमाज़ों का फ़िदिया फ़क़ीर के क़ब्ज़े मे देकर उसे इसका मालिक बना दें, अब वह फ़क़ीर दोबारा इस रकम को देने वाले को ही तोहफ़े में वापस कर दे। इसी तरह उलट फेर करते रहें और सारी नमाज़ों का फ़िदिया अदा हो जाएगा।

नोट– तीस (30) दिन की रक़म के जरिये ही हीला करना शर्त नहीं वो तो समझाने के लिए मिसाल दी गई थी। एक साल की रकम से भी हीला कर सकते है। नमाज़ों का फ़िदिया अदा करने के बाद इसी तरह रोज़ों का भी फ़िदिया अदा कर सकते है। ग़रीब अमीर सभी फ़िदिया का हीला कर सकते हैं।

अगर आप मैयत के लिए ये अमल करें तो ये मैयत की ज़बरदस्त मदद होगी। इस तरह मरने वाला भी अल्लाह के फ़ज़्ल से फ़र्ज़ के बोझ से आज़ाद हो जाएगा और रहमते इलाही से उम्मीद है कि मैयत की मग़फ़िरत फरमा दे। बाज़ लोग मस्जिद वग़ैरह में एक कुरआन पाक का नुस्ख़ा देकर अपने मन को मना लेते हैं कि हमने मरहूम की तमाम नमाज़ों का फ़िदिया अदा कर दिया ये इनकी ग़लतफ़हमी है। **(तफ़सील के लिए देखिए फ़तावा रज़विया, जिल्द 8, पेज नं. 128)** ये मसला और अच्छे ढंग से समझने के लिए किसी सुन्नी आलिमे दीन से पूछें।

③ <u>हज का बयान</u>– सारी उम्र में एक बार हज करना फ़र्ज़ है। जो इसको फ़र्ज़ न माने वह काफ़िर है। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हज करने से मुसलमान गुनाहों से इस तरह पाक हो जाता है जैसे माँ के पेट से पैदा हुआ है कि जिसने कोई गुनाह न किया हो। और फ़रमाया कि हज कमज़ोरों और औरतो के लिए जिहाद है। और फ़रमाया हाजी के हर क़दम पर सात करोड़ नेकियाँ उसके नाम–ए–आमाल में लिखी जाती है।

हज कौन कर सकता है– हज करने वाला आक़िल बालिग़ हो। हज के अख़राजात मौजूद हों। सफर के दौरान सफर करने की क़ूव्वत हो। रास्ते में किसी क़िस्म का ख़तरा न हो। वक़्त में इतनी गुंजाइश हो कि पूरा–पूरा हज मुकम्मल कर सके। अपने अहलो अयाल के लिए इस क़द्र ख़र्च मुहैया हो कि वापस आने तक गुज़र बसर हो सके। क़र्ज़ अगर हो तो पूरा अदा किया हो।

अगर इन शराइत में से एक शर्त रह जाए तो हज कुबूल न होगा। जब हज करने के लायक़ हो जाए तो हज फौरन फ़र्ज़ हो जाता है यानी उसी साल में और अब देर करने में गुनाह है। ज्यादा जानने के लिए वेबस इट देखें।

④ **सदक़ा–ए–फ़ित्र का बयान**– रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि बन्दे का रोज़ा आसमान व ज़मीन के बीच में लटका रहता है जब तक वह सदक़ा–ए–फ़ित्र अदा न करें।

सदक़ा–ए–फ़ित्र कौन देगा– हर मालिके निसाब (जिसका निसाब हाजते असलिया के अलावा हो) पर अपनी तरफ़ से और अपनी हर नाबालिग़ औलाद की तरफ़ से एक–एक सदक़ा–ए–फ़ित्र देना हर साल वाजिब है। बेहतर है के ईद की नमाज़ से पहले अदा करे कि ये सुन्नत है। (ईद के दिन फ़ज्र का वक़्त होते ही सदक़ा ए फ़ित्र वाजिब हो जाता है)। सदक़ा–ए–फ़ित्र के लिए आक़िल बालिग़ और माल नामी होने की शर्त नहीं यानी माल पर साल गुज़रना शर्त नहीं।

सदक़ा–ए–फ़ित्र कितना दिया जाएगा– दो किलो पैंतालिस ग्राम गेहूँ या उस की क़ीमत, चाहे रक़म दो या अनाज सब जाइज़ है। फ़ितरे की अदाइगी के लिए गेहूँ या उसका आटा या सत्तू या खजूर या मुनक्का या जौ या उसका आटा सब दे सकते है।

⑤ ज़कात का बयान

ज़कात किसे कहते है– अल्लाह के लिये अपने माल में से एक हिस्से का मालिक किसी मुसलमान फकीर को बना देना जो शरअ ने मुक़र्रर की है।

ज़कात देने का फ़ायदा– अल्लाह फ़रमाता है फलाह (कामयाबी) पाते वह हैं जो ज़कात अदा करते हैं। और फ़रमाता है जो कुछ तुम खर्च करोगे अल्लाह तआला उसकी जगह और देगा और वह बेहतर रोज़ी देने वाला है।

ज़कात न देने की सज़ा और नुक़सान– अल्लाह फ़रमाता है कि जो लोग सोना चाँदी जमा करते हैं उसे अल्लाह की राह में खर्च नहीं करते उन्हें दर्दनाक अज़ाब है। ये जहन्नम की आग में तपाये जाएँगे और उनकी पेशानियाँ और करवटें और पीठें दागी जायेंगी।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो माल बर्बाद होता है वह ज़कात न देने से बर्बाद होता है और फरमाया ज़कात देकर अपने मालों को मज़बूत क़िलों में कर लो और अपने बीमारों का इलाज सदक़ा से करो। और फ़रमाया जो ज़कात न दे उसकी नमाज़ कबूल नहीं।

ज़कात तीन माल पर वाजिब है– 1– समन यानी सोना चाँदी 2– माले तिजारत 3– साइमा यानी चरने वाले जानवर

ज़कात वाजिब होने की चन्द शर्ते हैं– मुसलमान होना, आक़िल व बालिग़ होना, आज़ाद होना, मालिके निसाब होना, निसाब का हाजते असलिया और दैन (क़र्ज) के अलावा होना, पूरे तौर पर माल का मालिक होना यानी उस पर कब्ज़ा भी हो और माल पर पूरा एक साल गुज़र जाना। निसाब से कम माल पर ज़कात वाजिब नहीं।

ज़कात के लिए मालिके निसाब कौन है– मालिके निसाब यानी जिसके पास साढ़े सात तोला सोना या साढ़े बावन तोला चाँदी या उतना रूपया हो।

ज़कात के लिए हाजते असलिया क्या है– जिन्दगी बसर करने में जिस चीज़ की ज़रूरत हो जैसे रहने का मकान, पहनने के कपड़े, सवारी के जानवर, पेशेवरों के औज़ार वगैरह। ये हाजते असलिया है। जो माल हाजते असलिया के अलावा हो उस पर ज़कात वाजिब है जैसे– मकान, कपड़ा, औज़ार और जानवर वगैरह अगर तिजारत(बिजनेस) के लिए हो तो वो हाजते असलिया में से नहीं। इस पर भी ज़कात वाजिब है अगर वो निसाब को पहुँचे।

दैन (क़र्ज़) के अलावा होना– कोई निसाब का तो मालिक है लेकिन उस पर इतना कर्ज़ा है कि कर्ज़ा अदा करने के बाद निसाब नहीं रहता तो ज़कात वाजिब नहीं।

ज़कात कितनी दी जाएगी– सोने का निसाब साढ़े सात तोला है जिसमें चालीसवाँ हिस्सा यानी सवा दो माशा ज़कात फ़र्ज़ है इसी तरह चाँदी का निसाब साढ़े बावन तोला है जिसमे एक तोला तीन माशा छः रत्ती ज़कात फ़र्ज़ है। सोना चाँदी का मौजूदा बाज़ार भाव से इसकी क़ीमत लगाकर रूपए भी देना जाइज़ है।

सवाल– अगर किसी के पास कुछ सोना, कुछ चाँदी, कुछ माले तिजारत और कुछ नक़्द रूपया हो तो वह ज़कात किस तरह अदा करेगा?

जवाब– इसका तरीक़ा ये है कि सोना, चाँदी और माले तिजारत की क़ीमत मौजूदा दौर के ऐतबार से मालूम कर लें फिर आपके पास जो नक़द मौजूद है उसे उसके साथ जोड़ दें फिर देखें कि साढ़े सात तोला सोना या साढ़े बावन तोला चाँदी की क़ीमत को पहुँचता है या नहीं। अगर नहीं पहुँचता तो ज़कात वाजिब नहीं और अगर पहुँच जाता है तो इस रकम का चालीसवाँ हिस्सा यानी ढाई परसेंट ज़कात वाजिब है।

रूपए में से चालीसवाँ हिस्सा या ढाई परसेंट कैसे अलग करें –

ये बहुत आसान है। सबसे पहले आप कैलकुलेटर या मोबाईल के कैलकुलेटर एप्लीकेशन को खोलें। अब रूपए को उसमे लिखें, फिर भाग divide (÷ या /) के निशान को दबाएँ। फिर 40 दबाएँ, फिर = को। लीजिए आपका चालीसवाँ हिस्सा आ गया।

इसी तरह किसी रक़म का ढाई परसेंट निकालने के लिए पहले कैलकुलेटर पे रकम लिखें, फिर गुणा × के बटन को दबाएँ, फिर 2.5 लिखें फिर भाग divide (÷ या /) के बटन को दबाएँ, फिर 100 लिखें, फिर दबाएँ = को। लीजिए आपका ढाई परसेंट भी आ गया।

अब जो भी रक़म निकली इसका मालिक किसी मुसलमान फ़कीर को बना दीजिए तो आपकी ज़कात अदा हो जाएगी। आप चाहे ढाई परसेंट निकालें या चालीसवाँ हिस्सा दोनों की रक़म बराबर आएगी।

नोट– साल भर ख़ैरात करता रहा अब नीयत की कि जो कुछ दिया ज़कात है तो अदा न हुई। ज़कात देते वक़्त या ज़कात का माल अलग निकालते वक़्त ज़कात की नीयत का होना बहुत ज़रूरी हैं। फितरा ज़कात के ढेरो मसाइल सुनने व सीखने के लिए वेबसाइट www.sunnijamaat.net देखें।

इन किताबों को भी ज़रूर पढ़ें

1. रोज़ा, नमाज़, हज, ज़कात, कुर्बानी, पाकी नापाकी, जन्नत दोज़ख़, मौत, शिर्क, तक़लीद जैसे ढेरों इस्लामी मालूमात और मसले का आसान जवाब जानने के लिए ज़रूर ख़रीद कर पढ़ें किताब **"क़ानूने शरीअ़त"**।

2. औरतों से जुड़े ढेरों पेचीदा मसलों का आसान जवाब जानने के लिए ज़रूर ख़रीद कर पढ़ें किताब **"सुन्नी बहिश्ती ज़ेवर"**।

3. ईमान व अक़ीदे को और मज़बूत करने और वहाबियों, देवबंदियों के सभी ऐतराजों का मुकम्मल जवाब कुरआन और हदीस से जानने के लिए ज़रूर ख़रीद कर पढ़ें किताब **"जा अल हक़"**।

4. छींक आ जाए तो बदशगुन मानना, बिल्ली के रास्ता काटने को बुरा समझना, मुहर्रम के महीने में शादी ब्याह ना करना, जैसी ढेरों ग़लतफ़हमियों का जवाब जानने के लिए पढ़ें किताब **'ग़लतफ़हमियाँ और उनकी इस्लाह'**

5. वहाबियों, देवबंदियों की मक्कारियों और गुस्ताख़ियों को जानने और इनको मुँह तोड़ जवाब देने और ढेरों इस्लामी जानकारी हासिल करने के लिए ज़रूर पढ़ें हमारी जबरदस्त किताब **"सुन्नी और वहाबी में फ़र्क़"**।

6. हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सीरत और हालात ए जिंदगी को जानने के लिए पढ़ें बेहतरीन किताब **"सीरतुल मुस्तफ़ा"**

7. इल्म बढ़ाने के लिए किताब तम्हीदे ईमान, खून के आंसू, अनवारे शरियत, इस्लामी तारीखे आलम, तारीखे करबला को भी पढ़ सकते है।

मोबाइल और इन्टरनेट– इन्टरनेट के कुछ फायदे है तो ढेरो नुकसान भी है। बच्चो को स्मार्ट फोन ना दें, ये आपकी जिम्मेदारी है। अक्सर देखा गया है कि बच्चे गंदी फोटो और वीडियो देखते है। मोबाइल/कम्पयूटर में नंगी फोटो वीडियो ना दिखे इसके लिए Parental control और Porn block लगाने का तरीका यूट्यूब से सीखे और यूट्यूब में गंदी चीजें ना दिखे इसके लिए यूट्यूब की Settings खोले फिर General में जाकर Restricted Mode को नीला (आन) कर दें।

www.sunnijamaat.net जैसी बेमिसाल वेबसाइट को हमारी टीम ने 4 साल की कड़ी मेहनत से तैयार किया है। बहुत से सवालो को आप पूछना चाहते थे लेकिन किससे पूछे? ऐसे लगभग 6000 सवालों के जवाब आडियो में यहाँ सुने। ये सवाल जवाब 63 उन्वान पर फैले है। हम्द, नात, मनकबत, कुरआन तफसीर व तर्जमा, मशहूर औलिया की हालात ए ज़िंदगी भी आडियो में सुने। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा को जानने समझने के लिए पूरा पैनल बनाया गया है। ढेरो किताबो की पीडीएफ और इस्लामी बहनो व बच्चो के सीखने के लिए भी बहुत कुछ है। और बहुत कुछ यहाँ मिलेगा। ये वेबसाइट इस्तेमाल में बहुत आसान है। अहले सुन्नत व जमात को बढ़ावा देने के लिए आप खुद वेबसाइट को देखें अपने बच्चो और घरवालो और जान–पहचान वालो को बताकर सवाब कमाए। और हमारे टीम की हौसला अफजाई करे।

छोटी–छोटी लेकिन मोटी बातें– आज हम लोगों ने ऐसा माहौल बना दिया है कि अब लोग इस्लाम के इस आसान रास्ते को मुश्किल समझने लगे हैं। मुसलमानो! नीचे लिखी बातों के हिसाब से अपनी ज़िन्दगी गुज़ारिये और दुनिया व आख़िरत में कामयाबी हासिल करिये।–

1. आप नमाज़ रोज़े के पाबन्द बनें और अपने घर में दीनी माहौल बनाएँ। कुरआन पढ़ना खुद सीखें, पढ़ें और घरवालों को पढ़वाएँ। सर से पैर तक तहज़ीब और लिबास के ज़रिये सच्चे पक्के मुसलमान नज़र आएँ।

2. वालिदैन (माँ–बाप) को राज़ी रखें क्योंकि उनकी रज़ा में अल्लाह की रज़ा है और उनकी नाराज़गी में अल्लाह की नाराज़गी है। वालिदैन को एक बार नज़रे मुहब्बत व एहतराम से देखने पर एक हज का सवाब मिलता है।

3. शादी ब्याह के मौके पर इतना ज़्यादा खर्च करने का रिवाज पड़ गया है कि लाखों की तादाद में लड़के लड़कियाँ बग़ैर निकाह के बूढ़े हुए चले जा रहे हैं। जिसकी वजह से कई ज़िनाकारी जैसे गुनाहे कबीरा में मुब्तला हैं इसलिए शादी को कम से कम ख़र्चे में करने का माहौल बनाइए। मस्जिद में जुमा के दिन निकाह करना मुस्तहब (अच्छा) है और फिज़ूल ख़र्चों से बचाता है।

4. आमदनी बढ़ाने से ज़्यादा फालतू ख़र्च घटाने की फ़िक्र रखिये। ये फ़िक्र रखना कि हम ऐसा कपड़ा नहीं पहनेंगे या ऐसा मकान नहीं बनवाएँगे

या ऐसा खाना नहीं खाएँगे और खिलाएँगे तो लोग क्या कहेंगे? इस तरह की फ़िक्र करने के बजाए आप अपने हाल और आमदनी को देखें क्योंकि अकसर आदमी झूठी वाह वाही के चक्कर में ज़रूरत से ज़्यादा ख़र्च करता है। फिर बढ़े हुए फालतू ख़र्च को पूरा करने की फ़िक्र में बेईमान, बेरहम, रिश्वतख़ोर और झूठ बोलकर हराम कमाता है। कभी–कभी तो क़र्ज़ तक लेना पड़ जाता है फिर इस दुनियादारी के चक्कर में धीरे–धीरे दीन से दूर होता चला जाता है। जबकि हदीस शरीफ़ में है "दुनिया में ज़िन्दगी मुसाफिर परदेसी की तरह गुज़ारो और खुद को क़ब्र वालों में समझो **(मिश्कात शरीफ़, पेज नं. 450)**

5. ऐ मुसलमान भाइयो! आपको अल्लाह तआला ने बीवी बच्चों पर हाकिम बनाया है इसलिए उनकी बदआमालियों के लिए आप भी ज़िम्मेदार हैं। आप मैदाने महशर में इसके लिए जवाबदेह होंगे कि आपने अपने बीवी बच्चों को बेलगाम छोड़कर बेहयाई की इजाज़त क्यूँ दी?

6. ऐ क़ौमे मुस्लिम की बेटियो! अगर किसी मजबूरी या ज़रूरी काम की वजह से तुम्हें घर से बाहर निकलना पड़े तो महरम के साथ परदे में रहकर बाहर निकलो और काम ख़त्म होते ही फ़ौरन अपने घर वापस आ जाओ।

7. Co-Education(सहशिक्षा) से अपने बच्चों को बचाएँ। अपनी बहन बेटियों को हरगिज़ इन स्कूलों में न भेजें जहाँ लड़के लड़की एक साथ पढ़ते हों

8. **हदीस**– जब तुममें से कोई अपने से ज़्यादा मालदार और हुस्न व जमाल वाले को देखे तो उसको चाहिए कि वह उन्हें भी देखे कि जो उससे नीचे है कम माल और कम हुस्न व जमाल वाला है।

(सही बुख़ारी, जिल्द 2, पेज नं. 768)

9. झूठ, फ़रेब, मक्कारी, धोखेबाज़ी, बेईमानी, रिश्वतख़ोरी, सूद व ब्याज और मजदूरों की मजदूरी रोक–रोक कर हराम तरीक़े से माल जमा कर लेना फिर राहे खुदा में ख़र्च करना दीनदारी नहीं बल्कि बहुत बड़ी बेवकूफ़ी है। हदीस शरीफ़ में है– "हराम कमाई से सदक़ा और ख़ैरात क़ुबूल नहीं"।

(मिश्कात शरीफ़, पेज नं. 242)

10. किसी की तरक़्क़ी देखकर हसद(जलन) रखना एक ख़तरनाक बीमारी है। हसद नेकियों को ऐसे खाती है जैसे आग लकड़ी को।

11. बच्चा दुनिया में सिर्फ़ एक हुनर लेकर आता है वो है 'रोना'। वो उस एक हुनर से अपनी माँ से सब कुछ करवा लेता है इसलिए मुसलमानो अपने रब के सामने 'रोना सीखो' और अपने रब को मना लो बेशक तुम्हारा परवरदिगार माँ से 70 गुना ज़्यादा प्यार करने वाला है।

12. दाढ़ी रखकर बुरे काम करने में शर्म महसूस होती है और दाढ़ी रखने से चेहरा नूरानी हो जाता है और लोग इज़्ज़त करने लगते हैं।

13. कभी भी अपनी ज़बान से अल्लाह और उसके रसूल और वलियों के ख़िलाफ़ कोई बात ना निकालें। कभी–कभी लोग दूसरों को खुश करने के लिए ऐसी बोली बोलते हैं कि जिसका बोलना और सुनना दोनों कुफ़्र है। जैसे–नमाज़ पढ़ना बेकार आदमियों का काम है, नमाज़ पढ़ना ना पढ़ना सब बराबर, रोज़ा वह रखे जिसको खाना ना मिले, हम ने बहुत नमाज़ें पढ़ीं कुछ फ़ायदा नहीं, सब धर्म बराबर हैं। यह सब कलिमात ख़ालिस कुफ़्र और ग़ैर इस्लामी बोली है। जिनको बोलने से आदमी काफ़िर और इस्लाम से ख़ारिज हो जाता है।

14. जब दुआ और कोशिश से बात ना बने तो फ़ैसला अल्लाह पर छोड़ दो। बेशक अल्लाह अपने बन्दों के लिए बेहतर फैसला करने वाला है।

कुछ और काम की बातें

- हर हाल मे अल्लाह का शुक्र अदा करने की आदत बना लीजिये।
- ज़्यादा से ज़्यादा दरूद शरीफ़ पढ़िये ताकि कल क़यामत के रोज़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शफ़ाअ़त नसीब हो सके।
- हदीस– फ़र्ज़ इबादत के बाद हलाल रोज़ी की तलाश फ़र्ज़ है। **(मिश्कात शरीफ, पेज नं. 242)**
- हराम का एक निवाला चालिस दिन की इबादतों का नूर ख़त्म कर देता है और दुआएँ कुबूल नहीं होतीं।
- ज़्यादा दीनी इल्म वाला अल्लाह से ज़्यादा डरता है।
- मार्डर्न फैशन अपनाने की बजाए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नतों को अपनाएँ।
- एक सुन्नत ज़िंदा करने पर सौ (100) शहीदों का सवाब मिलता है।
- बेहूदा फिल्मी गाने सुनने और गुनगुनाने की बजाए नाते पाक सुनने की आदत डाल लीजिये।
- पाकी आधा ईमान है। **(मसनद अहमद)**
- सलाम करने की आदत डाल लें दोस्त बढेंगे दुश्मन घटेंगे।
- सुबह के वक़्त सोना रिज़्क़ को रोक देता है।
- हक़ बात कहो – चाहे तनहा रह जाओ।
- हया (शरम) मोमिनो का ज़ेवर है।
- नमाज़ को अपनी ज़रूरत बना लो आदत नहीं क्योंकि इन्सान आदत के बिना तो रह सकता है लेकिन ज़रूरत के बिना नहीं।
- सच्चाई..........ऐसी दवा है जिसकी लज़्ज़त कड़वी मगर तासीर शहद से ज़्यादा मीठी है।
- नामे मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहिवसल्लम सुनकर अंगूठा चूमने की आदत डाल लीजिए। ये आदम अलैहिस्सलाम और अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहू तआला अनहो की सुन्नत है।

चोर को अपने घर में पनाह देने वाला चोर है– इस बात को आप जानते हैं फिर ऐ मुसलमानो, आप खुद सोचिये कि क्या आप ईमान पर हैं? गुस्ताख़ वहाबियों देवबंदियों की तरफ़दारी करके आप अल्लाह और उसके रसूल से लड़ाई का ऐलान कर रहे हैं। हो सकता है कि आम मुसलमानो की नमाज़, रोज़े की लापरवाही और कुछ गलत जाहिलाना आदतों को देखकर आपको शिकायत हो। लेकिन आपको किसने मना किया है उन्हें रोकने और टोकने के लिए। क्या वहाबियत के नाम की मोहर लगवाकर ही ऐसा करेगें।

भाई नाक पे अगर गंदगी लग जाए तो नाक नहीं काट दी जाती। आवाम के जाहिलाना अमल देखने की बजाए सुन्नियों (अहले सुन्नत व जमाअत) के उलेमा की किताबें क्या कह रही हैं उसे जानें उसके बाद कोई राय कायम करें।

समझदार सुन्नियों से अपील– सुन्नी भाइयो क्या आपको यह किताब पसंद आई? अगर आपका जवाब 'हाँ' में है तो फिर आप ज़रूर चाहेंगें कि ये किताब ज़्यादा से ज़्यादा फैले? अगर आप चाहते हैं कि ये किताब हर सुन्नी मुसलमान के हाथ में पहुँचे तो इसके लिए दो तरीक़े हैं :–

पहला तरीक़ा– वहाबियों देवबंदियों को मुँह तोड़ जवाब देने के लिए आप खुद इस किताब को ज़्यादा से ज़्यादा तादाद में मंगवाए और 55% तक की छूट पाए। फिर किताब को अपने रिश्तेदारों पड़ोसियों और जान पहचान वालों को दें। या शादी ब्याह के मौके पर या जलसे में या फ़ातिहा या मीलाद की महफ़िल में बंटवाए। इस किताब को मंगवाने का तरीका इसी किताब के पेज न0 2 पर और किताब के पीछे कवर पर दिया गया है।

दूसरा तरीक़ा– अगर आप किताब खुद नहीं बांट सकते तो जितनी किताब आप बंटवाना चाहते है उतनी रकम हमें भेज दें। आपके दिये हुए पैसे से हमारी टीम इस किताब को छपवाकर ज़्यादा से ज़्यादा लोगों और मस्जिदों में बाँटेगी। आप जो भी रकम भेजना चाहते हैं उसे हमारे SBI के खाता संख्या (Account No.–**32972273204**) में **आरिफ अली** (ARIF ALI) के नाम से जमा करवा दें। पेटीएम और फोन–पे के जरिये भी रकम को भेज सकते है। पैसा आपका और मेहनत हमारी।

अपील– किताबों के अलावा हमारी टीम (Team) जमाअत रज़ा–ए–मुस्तफा के तहत कई दीनी कामों को करती है। इसलिए आपसे गुज़ारिश है कि पैसे से हमारी मदद करिये और हमारे टीम की हौसला अफज़ाई करे। एकाउन्ट या पेटीएम या फोन–पे के ज़रिये रकम भेज सकते है। अगर आप हमें कोई सुझाव देना चाहते हैं तो हमें 8687549224 या 8934888526 पर फोन करें या व्हाट्स एप करें या iamsunni999@gmail.com पर email भेजें।